

देशी गायों की उपयोगिता तथा उनकी संकर एवं विदेशी नस्ल की गायों से तुलना

देशी विदेशी गोवंश का तुलनात्मक अध्ययन

| - देशी गाय - | | - विदेशी गाय - | |
|--------------|---|----------------|--|
| 1. | देशी गाय की पीठ कुछ गोलाई लिए होती है जिसे टाट, कुकुद या Hump कहते हैं। बैलों/संडों में यह विशेष रूप से बड़ा होता है। इसकी उपयोगिता के विषय में अनुसंधान आवश्यक है। | 1. | विदेशी गायों की पीठ सीधी होती है व उनमें टाट नहीं होती है। |
| 2. | देशी गाय लम्बाई तथा आकार मध्यम से छोटी होती है। | 2. | विदेशी गाय आकार व लम्बाई बड़ी होती है। |
| 3. | देशी गायों में गर्दन के नीचे गलकम्बल (Dewlap) अत्याधिक विकसित होता है। | 3. | विदेशी गायों गलकम्बल इतना विकसित नहीं होता है। |
| 4. | देशी गायों के सींग बड़े होते हैं। | 4. | विदेशी गायों के सींग छोटे/ या नहीं होते हैं। |
| 5. | देशी गायों में अयन मध्यम से साधारण आकार का होता है। | 5. | विदेशी गायों में अयन अतिक विकसित होता है व नीचे तक लटका रहता है। |
| 6. | गीर, साहीवाल, ऑगोल, थारपारकर, कांकरेज आदि २० लीटर या उससे अधिक दूध देती हुई पायी गयी है। कुछ देशी नस्ल की गाय में दूध की उत्पादन क्षमता कम होती है। मगर विदेशी नस्ल के अनुसार दाना दिया जाय तो दूध बढ़ जाता है। | 6. | विदेशी गाय में दूध उत्पादन क्षमता अधिक होती है। |
| 7. | देशी गायों के बैल चुस्त होते हैं व कृषि कार्य के लिए सर्वथा उपयोगी पाये गये हैं। | 7. | विदेशी गायों से प्राप्त बछड़े सुस्त होते हैं व कृषि कार्य के लिए उतने कार्यशील नहीं होते हैं। |
| 8. | देशी गायों की आवाज का स्वर दमदार व ऊँची आवाज वाला होता है। | 8. | विदेशी गाय का स्वर धीमा होता है। |
| 9. | देशी गायें भारतीय परिवेश में पली बढ़ी है अतः यहाँ के हर प्रकार के जलवायु में इनकी रहने की क्षमता निर्विवाद है। यह गायें भीषण गर्मी (वातावरण का तापक्रम 48-50C) तक रह सकती है व उनके उत्पादन, कार्य क्षमता पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। वे ज्यादा दूरी तक चलना एवं ज्यादा से ज्यादा श्रम करने में सक्षम होती है। | 9. | विदेशी गायें ठण्डे देशों के पर्यावरण में ही रह सकती है। भारतीय परिवेश में रखने के लिए इनके लिए अलग से रहने की व्यवस्था करनी पड़ती है व ये गायें अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाती है तथा इनकी उत्पादन क्षमता घट जाती है व बीमार होने के कारण मृत्यु भी हो जाती है। |
| 10. | देशी गायों का रखरखाव सस्ता होता है प्रायः ये गायें चरागाह में चरकर ही अपना पेट भर लेती है। फिर भी थोड़ा दाना व चारा खाकर ये दूध देती रहती है। रहने के लिए किसी विशेष आवास की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि जहाँ मनुष्य रहते हैं। यह गाय उसी मकान, झोपडी या उसके पास ही रह लेती है। | 10. | प्रायः विदेशी या संकर नस्ल की गायों को रखने के लिए अलग से व्यवस्था करनी पड़ती है। क्योंकि ये कम तापक्रम पर व अच्छे आवास व्यवस्था व अच्छा चारा दाना देने पर ही इच्छित दूध का उत्पादन कर सकती है। अतः इनके रख रखाव पर खर्चा अधिक करना पड़ता है। |
| 11. | देशी गायों में रोगों से बचाव के लिए एक उत्तम प्रकार की रोगप्रतिरोधक क्षमता होती है। सामान्य प्रकार के संक्रमण तो होते ही नहीं हैं भयानक से भयानक रोग भी साधारण रूप से/ हल्के लक्षण उत्पन्न कर ही निकल जाते हैं। पोकमा (रिन्डरपैस्ट), गालघोटु आदि रोगों के लिए भी सुग्राही नहीं होती कम होती है। अतः आर्थिक हानि कम होती है। | 11. | विदेशी व संकर किस्म की गायों में बीमारियों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है अतः यह गायें सामान्य किस्म के संक्रमण भी नहीं झेल पाती व प्रायः बीमार हो जाती है। कुछ रोग तो इनमें होते ही ये मरने लगती है। यथा पेकिना (रिन्डरपैस्ट) गलघोटू, मुख-खुर रोग आदि से विदेशी नस्लों की गायें में मृत्यु दर अधिक होती है इनमें बीमार होने की प्रकृति व आकृति अधिक होती है। |
| 12. | देशी गायों में दूध उत्पादन क्षमता प्रायः साधारण ही होती है व अयन बीमारी के प्रति इतना सुग्राही नहीं होता है। थनैला रोग कभी कभी देखने को भी मिलता है मगर उसका समय रहते यदि उपचार कर दिया जाय तो थन में दूध बना रहता है सूखता नहीं। इसका मुख्य प्रतिरोधी क्षमता (मैक्रोफेज कोशिकाओं) का उत्तम किस्म का होना है। | 12. | विदेशी गायों में अधिक दूध देने के कारण इनमें थनैला रोग अधिक होता है। इस रोग के जीवाणु त्वचा व थनो पर रहते हैं थनके छेद से आयन में प्रवेश कर बीमारी उत्पन्न करते हैं प्रायः इस रोग के पश्चात उस थन का दूध सूख जाता है व दन गायों की उत्पादन क्षमता घट जाती है। इससे बचाव के लिए अति स्वच्छ वातावरण व आवास की आवश्यकता होती है। जिससे इन गायों को पालना महंगा सिद्ध होता है। |

| | |
|--|---|
| <p>13. देशी गाय इसी देश की मूल की है अतः बीमारी बाहर से लाने का प्रश्न ही नहीं है।?</p> | <p>13. विदेशी नस्ले कई प्रकार की बीमारियां भी अपने साथ लायी है। जैसे मायकोप्लाज्मा ब्रुसेल्लोसिस, थिलैरियोसिस, संक्रामक गर्भपात न्यूमोनिया, दस्त राटोवायरस, लैप्टोस्पाइरा, क्षय रोग, ब्रुसेल्लोसिस क्लेमाइडिया, जोहनीज रोग, इरपग विषाणु रोग आदि। मगर विदेश से वीर्य/दूध/गाय/साडों द्वारा यह बीमारिया हमारे देश में भी प्रवेश कर गई अब स्थिति यह है कि इन रोगों के अनुसंधान, निदान व रोकथाम पर एक बडी रकम खर्च करनी पड़ती है अथवा आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।</p> |
| <p>14. देशी नस्लों का दूध अधिक पौष्टिक होता है। वैज्ञानिक रूप से वसा, प्रोटीन आदि में तो खास अन्तर नहीं दिखता है मगर कुछ सूक्ष्म तत्व यथा साइटोकाइन्स, लवण, इन्टर फैरान आदि तत्व देशी गाय के दूध में होंगे जो रोगो से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते हैं।</p> | <p>14. विदेशी गाय अधिक मात्रा में दूध देने के कारण इनका दूध प्रायः पतला व देशी गाय के दूध की अपेक्षा कम पौष्टिक माना गया है।</p> |
| <p>15. देशी गायों के बछड़े बड़े होकर उत्तम किस्म के बैल बनते हैं व कृषि कार्य, भार ढोने के कार्य में काम आते हैं। इन बैलों की ताकत, कार्यक्षमता, सभी प्रकार के पर्यावरण/वातावरण में कार्य कर सकते हैं व खेती के लिए वरदान है उत्सर्जन करते हैं। जो भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाता है।</p> | <p>15. वही ट्रैक्टर से खेती पेट्रोल/तेल/डीजल जलने से भूमिको प्रदूषित करती है इन बातों का तात्कालिक प्रभाव भले ही दिखाई न दे मगर कालान्तर में हानिकारक होता है। विदेशी गायों के बछड़े उपेक्षाकृत सुस्त व कार्य क्षमता में कम होते हैं। कृषि कार्य में इनकी खास उपयोगिता सिद्ध नहीं हुई है।</p> |
| <p>16. देशी गायों के बैलो का उपयोग भार ढोने के काम में मुख्य रूप से जमीन से पानी निकालने, खेत की उपज शहरो तक ले जाने व शहर का सामान घर ले जाने व शादी ब्याह आदि में सवारी ढोने के कार्य किये जाते रहे हैं।</p> | <p>16. आजकल यह कार्य बस, ट्रक, ट्रक्टर आदि जो पेट्रोल डीजल आदि द्वारा चलते हैं। जो वायु प्रदूषण फैलाते हैं व इनसे हमारी निर्भरता विदेशी आयातित तेल पर बढ़ रही है विदेशी गायों के बैल इन कार्यों के लिए उपयोगी नहीं होते हैं।</p> |
| <p>17. ऐसा माना जाता है कि देशी गाय अपनी निस्वांस में भी ऑक्सीजन का भी अंश छोड़ती है जो मनुष्य व पर्यावरण के लिए लाभ कारी है।</p> | <p>17. विदेशी गायों में ऐसी किस विशेषता के विषय में वर्णन नहीं मिलता।</p> |
| <p>18. देशी गायों चूंकि संक्रामक रोगों के प्रति कम सुग्राही होती है अतः इनमें क्षय रोग, ब्रुसेल्ला रोग आदि लगने की संभावना बहुत कम रहती है तथा मनुष्य एक ही कमरे छप्पर आदि में गाय के साथ साथ परिवार का जीवन यापन कर सकता है तथा उसे कोई हानि नहीं होती है।</p> | <p>18. विदेशी तथा संकर गायें विभिन्न प्रकार के संक्रमणों के लिए अधिक सुग्राही होती है इनमें क्षम रोग, मायक्रोप्लाज्मा, लैप्टोस्पाइरा विभिन्न विषाणु रोग आदि प्रायः हो जाते हैं जो दूध, सम्पर्क सांस, मूत्र, गोबर द्वारा मनुष्य में रोग उत्पन्न कर सकते हैं ऐसा देखा गया है कि जो लोग इस प्रकार की गायों के सम्पर्क में रहते हैं उनमें क्षय रोग, ब्रुसेल्ला रोग आदि होने की संभावना बढ़ जाती है। हालांकि इन रोगों का पता आसानी से नहीं लगता फिर भी अनुभव व अध्ययन यह बताते हैं कि मनुष्य में इन पशुओं से बहुत सी बीमारियाँ लग जाती है।</p> |
| <p>19. देशी गायें पर्यावरण के अनुकूल हैं। क्योंकि ये चारा दाना खाने बाद उसे अच्छी तरह पचाती है व वातावरण में मीथेन, कार्बनडाई आक्साइड, कार्बन मानोक्साइड, आमोनिया आदि गैसों का कम उत्सर्जन करती हैं।</p> | <p>19. विदेशी नस्ल की गायें मीथेन, कार्बनडाईआक्साइड कार्बनमोनोक्साइड, अमोनिया आदि कई प्रकार की हानिकारक गैसों का बहुतायत में उत्सर्जन करती है जो ओजोन पर्त को नुकसान पहुंचाती हैं इन्हे ग्रीन हाऊस गैस कहते हैं व परावैगनी किरण का पृथ्वी पर प्रभाव बढ़ाने में सहायक है।</p> |
| <p>20. देशी गाय के दूध, दही, मक्खन, घी, गोमूत्र तथा गोमय (पंचगव्य से विभिन्न प्रकार की औषधिया निर्मित की जाती है जो मानव स्वास्थ्य के लिए अनुपम औषधि सिद्ध हुई है तथा कई प्रकार के असाध्य रोगों की अचूक रामबाण दवा माना जा रही हैं।</p> | <p>20. विदेशी गायों के उत्पादों में इस प्रकार के गुणों का वर्णन कहीं नहीं मिलता है।</p> |
| <p>21. देशी गाय गायों को दूध, बछड़े तथा अन्य उत्पाद जैसे गोमूत्र, गोबर आदि के लिए पाला जाता है अतः इनमें ये जहरीले टीके लगाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है।</p> | <p>21. विदेशी संकर नस्ल की गायों को मांस तथा दूध उत्पादन के लिए रख जाता है जब ये गाये दूध उत्पादन बन्द होने की तरफ होती है तो प्रायः इनके आक्सीटोसिन नामक हार्मोन का टीका लगाकर दूध निकाला जाता है मानव स्वास्थ्य के लिए काफी घातक है।</p> |
| <p>22. देशी गाय अपने मालिक/स्वामी की रक्षा को तत्पर रहती है यह यदि घर बर्धी है तो चोर जंगली जानवर/सांप आदि आने पर जोर जोर से रक्षा कर अपने स्वामी को जगा देती हैं।</p> | <p>22. विदेशी गायों में इस प्रकार का कोई गुण नहीं मिलता है।</p> |
| <p>23. देशी गायों के मूत्र की उपयोगिता सर्वसिद्ध है। इसे पवित्र माना गया है व पंचगव्य / पंचामृत माना जाता है नवीन परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि यह प्रजनन क्षमता व रोग प्रतिरोधी क्षमता का बढ़ता है।</p> | <p>23. विदेशी गायों के मूत्र के विषय में विवरण नहीं मिलता।</p> |

| | | | |
|-----|--|-----|---|
| 24. | देशी गाय के गोबर से घर को लीपने से वह परावैगनी किस्मों से मुक्त हो जाती है। अतः गोबर में ऐसी सामर्थ्य है कि वह हमें विकिरण से बचाता है। दूसरे गोबर में कई प्रकार के जीवाणु व सूक्ष्मजीव होते हैं जो प्रोबायोटिक का कार्य करते हैं। | 24. | विदेशी गायों के विषय में ऐसी कोई जानकारी नहीं है। |
| 25. | देशी गाय निम्नकोटि के वातावरण में भी निरोग रहकर सामान्य जनन तथा उत्पादन प्रदर्शित करती है। | 25. | विदेशी तथा संकर गायें अच्छे वातावरण में बहुत अच्छी जनन तथा उत्पादन क्षमता प्रदर्शित करती है। |
| 26. | चरने वाली देशी गाय के मूत्र तथा गोबर में अनेक औषधीय गुण होते हैं तथा गोबर हमेशा गंध रहित होता है। | 26. | विदेशी गाय अधिक दाना खाती है जिससे उनके गोबर, मूत्र में कोई औषधीय गुण नहीं होते तथा इनके गोबर से जल्दी ही दुर्गन्ध आने लगती है। |
| 27. | देशी गायों का रखरखाव अत्यंत सरल तथा कम खर्चिला है। | 27. | विदेशी गायों का रखरखाव क्लिष्ट तथा खर्चीला है। |
| 28. | देशी गोवंश को सामान्यतः भारत में प्राकृतिक खाद्य दिया जाता है। चूंकि रोग बहुत कम होते हैं। अतः अंग्रेजी दवाओं की भी आवश्यकता भी कम रहती है। | 28. | विदेशो में गौवंश को पिछले 60-70 वर्षों से मांसाहार (Processed meat) दिया जा रहा है। जिससे मंड काउ रोग हुआ। लाखों गौवंश मारना पड़ा। ऑक्सीटोसिन के इंजेक्शन लगाते रहें, बी जी एच (बोबाईन ग्रोथ हार्मोन) के इंजेक्शन लगाने से वहाँ की गायों को दूध कैंसरकारक हो गया है। (WWW.hta.org) ऐसा अमेरिका में सिद्ध हुआ। |
| 29. | भारतीय नस्लो का गोमूत्र 104% तक, मनुष्यों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ता है। | 29. | विदेशी गाय का मूत्र 15% तक ही रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। |
| 30. | दूध में सोल्यूबल फॉस्फेट 17 से 18 माईको ग्रॉम / माईको मिली ग्रॉम तक होते हैं। | 30. | इनके दूध में सोल्यूबल फॉस्फेट 38 से 39 माईको ग्रॉम / माईको मिली ग्रॉम तक होते हैं। |
| 31. | देशी गौवंश का श्रेष्ठ रखरखाव करने से पूरे 25 वर्ष की औसत आयु तक जीवन रहता है। | 31. | संकरित एवं विदेशी गोवंश का आयुष्य बहुत कम एवं मृत्यु दर ज्यादा पाई गयी है। |
| 32. | देशी गाय के दूध में A-2 प्रोटीन पाया गया है। जो हृदय रोग, कर्क रोग, ऑटिजम (मानसिक रोग), मधुमेह आदि को रोकथाम सहायक है। | 32. | जबकि विदेशी गायों के दुध में A-1 प्रोटीन पाया जाता है। जो इन सभी हृदय रोग, कर्क रोग, ऑटिजम (मानसिक रोग), मधुमेह आदि को बढ़ाने में सहायक होता है। |
| 33. | भारतीय गोवंश की सामान्य स्थिती में आयु 25 वर्ष है। देशी गायें 17 -18 बछड़े, बछड़ी देने के बाद भी प्रचुर दुध देती हुई पाई गयी है। यह सब श्रेष्ठ रखरखाव से संभव हुआ है। | 33. | विदेशी गोवंश में मृत्यु दर बहुत ज्यादा है। 10 वर्ष से कम ही सामान्य आयु रहती है। बाझपन भी बहुत जल्दी आता है। जबकि विदेशी गोवंश को 70-80 वर्षों से मांसाहार खिला रहे हैं। मंड काऊ रोग हुआ (Brain degeneration) |
| 34. | देशी गोवंश सामान्यता जंगलो में चरने जाता है व प्राकृतिक आहार पर रहता है। अतः श्रेष्ठतम् गुणवता वाले गोबर, गोमूत्र, दुध, दही, घी, छाछ प्रदान करता है। | 34. | ऑक्सीटोजिम इंजेक्शन दिए गए - माताओं और बहनों में शारिरीक समस्यायें Premature maturity असमय मासिक आदि की शिकायतें हुईं. अब ग्रोथ - हार्मोनि (BGH) के इंजेक्शन देने लगे जिससे उनका दूध कैंसर कारक सिद्ध होता है। |

CONTENTS

| Sr. No. | CATTLE BREEDS | Page No. | Sr. No. | CATTLE BREEDS | Page No. |
|---------|---------------|----------|---------|----------------|----------|
| 1 | Amritmahal | 1 | 21 | Lal Kandhari | 21 |
| 2 | Bachaur | 2 | 22 | Malenadu Gidda | 22 |
| 3 | Bargur | 3 | 23 | Malnad Gidda | 23 |
| 4 | Binjharपुरी | 4 | 24 | Malvi | 24 |
| 5 | Dangi | 5 | 25 | Mewati | 25 |
| 6 | Deoni | 6 | 26 | Motoo | 26 |
| 7 | Gangatiri | 7 | 27 | Nagori | 27 |
| 8 | Gaolao | 8 | 28 | Nimari | 28 |
| 9 | Ghumsari | 9 | 29 | Ongole | 29 |
| 10 | Gir | 10 | 30 | Ponwar | 30 |
| 11 | Hallikar | 11 | 31 | Pulikulam | 31 |
| 12 | Haryana | 12 | 32 | Punganur | 32 |
| 13 | Kangayam | 13 | 33 | Rathi | 33 |
| 14 | Kankrej | 14 | 34 | Red Sindhi | 34 |
| 15 | Kenkatha | 15 | 35 | Sahiwal | 35 |
| 16 | Khariar | 16 | 36 | Siri | 36 |
| 17 | Kherigarh | 17 | 37 | Tharparker | 37 |
| 18 | Khillari | 18 | 38 | Umblacherry | 38 |
| 19 | Kosali | 19 | 39 | Vechur | 39 |
| 20 | Krishnavalley | 20 | | | |

AMRIT MAHAL

The Amritmahal breed is found in Hassan, Chikmagalur and Chitradurga districts of Karnataka state in southern India. It is a famous draught breed known for its power and endurance. Animals are fiery and active. Bullocks are especially-suited for trotting and quick transportation. Cows are poor milkers. Between 1572 and 1636 AD the rulers of Mysore reared these cattle to supply milk and milk products to the palace, and to produce bullocks for movement of army equipments. These cattle consisted of three distinct strains: Hallikar, Hagalvadi and Chitaldoorg.

Amritmahals are grey cattle but their shade varies from almost white to nearly black. In some animals white grey markings are present on face and dewlap. Muzzle, face and tail switch are usually black but in older animals the colour looks lighter. Cows are white, bullocks slightly white and bulls' dark, rusty white and even interlace to some extent. Typical characteristics of this breed are head shape and horns. Head Amritmahal calf is long and tapering towards muzzle. Forehead is narrow, bulging out with a furrow in the middle. Horns are long and emerge from the top of the poll fairly close together in backward and upward direction, turn in and end in sharp black points. Sometimes the long, sharp points touch each other and appear like torch light. Eyes are

bright. Ears are small, horizontal and taper to a point. Hump is well developed and is carried slightly forward. Dewlap is fine and does not extend very far. Sheath and navel flap are very small and close to the body. Legs are medium in length and well proportioned. Hooves are hard, close together and small. Skin is thin, smooth, tight and jet black with short glossy hair. Udder is small, and compact with hard and small teats. An adult male weighs around 500 kg and female around 318 kg. Age at first calving is 1,337.6±115.52 days and milk yield is 572±24 kg. Calving interval is 577.6±24.32 days and lactation length 299±10 days.

अमृतमहल

अमृतमहल कर्नाटक राज्य के हासन, चिकमंगलूर एवं चित्रदुर्ग जिलों में पायी जाने वाली नस्ल है। यह नस्ल अत्यधिक ऊर्जावान एवं कार्यकुशल होती है। इसके बैल खेती एवं यातायात परिवहन के लिये अत्यधिक उपयोगी होते हैं। परन्तु इन गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है। इसका रंग सफेद से काले रंग तक विभिन्नता लिये होता है। चेहरा, नाक एवं पूँछ सामान्यतया काले रंग के होते हैं लेकिन बूढ़े एवं अधिक आयु वाले गौवंश में यह रंग हल्का हो जाता है। इस

नस्ल में गाय का रंग श्वेत, बैल का रंग हल्का सफेद जबकि साँड का रंग गहरा या हल्का भूरापन लिये हुये एवं मिश्रित होता है। इस नस्ल की विशिष्टता इसके सिर व सींग में है जो नुकीले, लम्बे व आगे की ओर हल्के झुके हुये होते हैं। सींगों का नुकीलापन भी सिरों पर तीक्ष्ण होता है। कभी-कभी ये सिरों पर एक दूसरे को स्पर्श करते हुए रहते हैं। आँखें चमकदार, कान छोटे, धरती के समानान्तर एवं आगे की ओर सिरोंदार होते हैं। कूबड़ पूर्ण विकसित एवं थोड़ा सा आगे की ओर प्रक्षेपित होता है। पैर की लम्बाई मध्यम शरीर के अनुपाती होती है। इसकी त्वचा पतली, चिकनी, गहरे काले रंग की एवं छोटे छोटे रोंयेदार होती है। इसका बाँक छोटा परन्तु थन सख्त होते हैं। इसके गले की झालर छोटी व कम लम्बी होती है। खुर भी छोटे व कठोर होते हैं। बैल का वजन लगभग ५०० किलोग्राम तक होता है। जबकि गाय का वजन ३०० कि.ग्रा. होता है। प्रथम ब्यांत का समय ३५० दिन है। इस नस्ल की गायों से दुग्ध उत्पादन ५००-६०० किग्रा प्रति दुध अन्तराल होता है।



BACHAUR

This breed was found in Sitamari and some parts of Madhubani, Darbhanga, Samastipur and Muzaffarpur districts of Bihar but a recent survey has revealed that the original breeding tract has shrunken and the Bachaur cattle are now concentrated in the areas adjoining Nepal border comprising Bachaur and Koilpur subdivisions of Sitamarhi district. It is known for its draught qualities and ability to thrive on poor fodder resources. This breed has very close similarity to the Harijana breed. The cattle are of gray colour, compact with straight back, well rounded barrel and short neck. Face is short, forehead broad and flat or slightly convex. Poll is almost absent, prominent eyes and medium sized horns. Legs are short and thin, medium sized dewlap, short and thick tail and small udder. Tail switch is either black or white. Cows are poor milker and produce around 540 kg of milk (range 495 to 605 kg) in a lactation of around 254 days. Bullocks can work about 8 hours without any break.

बच्छौर

बच्छौर यह गौ नस्ल विशेष रूप से बिहार राज्य के सीतामढ़ी, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, एवं मुजफ्फरपुर जिलों में पायी जाती है। लेकिन हाल ही में किये एक सर्वेक्षण के अनुसार शुद्ध बाच्छौर नस्ल अब सीमित होती जा रही है और केवल नेपाल की सीमा से सटे सीतामढ़ी जिले के बाच्छौर एवं कोलीपुर भाग में ही रह गयी है। यह नस्ल शुष्क क्षेत्र में अपनी कार्यशीलता के लिये तथा अपौष्टिक खाद्य के द्वारा निर्वहन के लिय जानी जाती है। यह हरियाणा नस्ल की गायों से बहुत

अधिक समानता रखती है। पशु हल्के भूरे रंग के होते हैं। गर्दन छोटी, माथा चपटा, बड़ा एवं हल्का सा उन्नत होता है। आँखें खूबसूरत और सींग मध्यम लम्बाई के होते हैं। पैर पतले व कम लम्बाई के होते हैं। गले की झालर पतली मध्यम आकार की होती है जबकि पूंछ छोटी व मोटी एवं सिरों का रंग काला या सफेद होता है। बाँक का आकार छोटा होता है। इस नस्ल की गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता कम होती है। ये एक ब्यांत के अन्तराल में, जो कि लगभग २५० से २६० दिन का होता है, औसतन लगभग ५४० (५०० से ६०० कि.ग्रा.) कि.ग्रा. दूध देती हैं। बैल बहुत श्रमसाध्य होते हैं व बिना रुके लगातार ८ घन्टे तक कार्यरत रहते हैं।



BARGUR

Bargur is a draught breed found around Bargur hills in Bhavani taluk of Erode district of Tamil Nadu, and are bred extensively by Lingaiys and Lambadis of that area. This area was earlier a part of Cairn bat are district. Animals are of Mysore-type, but smaller and more compact. They are very restive and fiery in disposition, and are difficult to train. They are light in built and are developed mainly for carrying out agricultural operations in the uneven and hilly terrain. Cattle of this breed are unsurpassed in speed and endurance in trotting.

Bargur cattle are of brown colour with white markings. Some white or dark brown animals are also seen. Calves are generally brown in colour. Colour does not change with age as in Kangayam and Umblachery breeds. Animals are well built, compact and medium in size. Head is brownish, well shaped, long and tapering towards the muzzle. Forehead is slightly prominent and has a deep furrow between the roots of horns. Muzzle is moderate and black in colour. Eyes are prominent and bright. Ears are moderately long and erect. Horns are of light brown colour, moderate length, closer at the roots, inclining backward, outward and upward with a

forward curve and sharp at the tip. Neck is fairly long and thin. Hump is moderately developed in females and well developed in males. Dewlap is thin and short extending up to sternum only. Navel flap is present in many animals. Sheath is tucked up. These cattle have thin and bony limbs. Thighs are well developed. Hindquarters are well developed and slightly dropping. Cows have small udders applied close to the body. Teats are small and well set apart. Cows are poor milker, and produce 250 to 1, 300 kg of milk in a lactation period of 270 to 310 days.

बारगुर

यह नस्ल मुख्य रूप से तमिलनाडु के इरोड जिले के भवानी तहसिल के बारगुर की पहाड़ियों वाले क्षेत्र में मिलती है। यह मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र में काम आती है, जहां अन्य नस्लें अनुपयोगी हो जाती है। इस वंश के नरों में गतिशीलता एवं सहनशक्ति बहुत अधिक होती है। इस नस्ल के पशु सफेद रंग के धब्बे युक्त भूरे रंग के होते हैं। कुछ सफेद एवं गहरे भूरे रंग के पशु भी देखे जाते हैं। पशु का आकार छोटा एवं मध्यम होता है। माथा उन्नत होता

है। सींगों का रंग हल्का भूरा होता है व लम्बाई सामान्यतया अच्छी होती है। आँखें उन्नत एवं चमकदार होती है। सापेक्षिक रूप से कान लम्बे व खड़े होते हैं। सींग पीछे की ओर एवं बाहर की ओर को झुके हुये तथा नौकदार होते हैं। गर्दन लम्बी व पतली होती है। गायों में कूबड़ का आकार छोटा जबकि बैलों में कूबड़ पूरी तरह से विकसित होता है। गले की झालर पतली होती है। गायों के बाँक एवं थन छोटे होते हैं, परन्तु चारों थन बराबर दूरी पर होते हैं। ये गायें कम दूध देने वाली होती हैं। इनका एक ब्यांत में दुध उत्पादन लगभग २५० से १३०० किग्रा प्रति २७० से ३१० दिन में रहता है।



BINJHARPURI

The study on "Survey, evaluation and characterization of Binjharpuri breed of cattle" made by Orissa Livestock Resources Development Society (OLRDS), supported by Dept. of Animal Breeding and Genetics, Orissa University of Agriculture and Technology, Bhubaneswar strongly advocates for improvement of this breed through selective breeding for the benefit of the farmers. Its estimated population in 2007 was 67,000 (approx). This is a docile type animal. Its coat's colour is white. Some animals are also found of Grey, Black. This breed horns are mainly curved, upward, inward. Length of ear is approx 20 cm. For head is straights. The nails of this breed mainly large but females are medium size. Daily milk yield of this breed 3.23 liter 4.34. liter his draught tolerance and heat tolerance of this breed is excellent.

बिंझारपुरी

ओरिसा लाइव्हेस्टोक रिसोर्स डेव्हलपमेंट सोसायटी (OLRDS) ने 'बिंझारपुरी प्रजाति का सर्वेक्षण, मूल्यांकन और विशिष्ट लक्षण' यह अध्ययन उपक्रम किया था। जिसे डिपार्टमेंट ऑफ अॅनिमल ब्रीडिंग और जनेटिक्स, ओरिसा युनिव्हर्सिटी ऑफ अॅग्रिकल्चर अॅण्ड टेक्नॉलॉजी भुवनेश्वर ने सहभाग लिया था। इस में कृषक के हित में इस प्रजाति का सुधार, चुनावी पैदास बढ़ाने के लिए करना चाहिये ऐसा समर्थन दिया था।

इनकी संभाव्य संख्या 2007 में 67,000 (लगभग) थी। यह नस्ल आसानी से नियंत्रण में ला सकते हैं। इनके खाल का रंग सफेद होता है। कुछ जानवर भूरे और काले भी पाये जाते हैं। इन नस्लों के सिंग वक्राकार, उपर जाकर अंदरतक आते हैं। कान का नाप लगभग 20 cm रहता है। इसका माथा सीधा रहता है। नस्लों का आकार बड़ा रहता है किंतु गायों का मध्यम आकार का रहता है। प्रतिदिन यह प्रजाति 3.23 लिटर से 4.34 लिटर तक दूध उत्पन्न करती है। अकाल ग्रस्त प्रदेश में और (उष्णता) गर्मी के मौसम में भी यह अपनी कमाल की सहनशक्ति उत्तम दिखाती है।



DANGI

Dangi is a draught breed found in a small area of Nasik and Ahmednagar districts in Maharashtra state including an area in the Western Ghats known as Dangs from which the breed takes its name. They are well known for their excellent working qualities in heavy rainfall areas, rice fields and hilly tracts.

Dangi breeders are semi-nomadic. They belong to Kandadi, Mahadeo Koli, Thakar and Maratha communities, who practice seasonal migration and remain away from their villages for about 9 months in a year (January to September). During the hot and dry season, the breeders migrate towards coastal areas where grass, tree fodder and water are available to some extent. During the period of heavy rainfall, they settle down at the foothills for protection from the cold draught.

Dangi cattle have distinct white coat colour with red or black spots distributed unevenly over the body. Animals are medium in size with deep bodies. Head is usually small with a slightly protruding forehead. Muzzle is large. Horns are short and thick. Ears are small. Dewlap is slightly pendulous. Hump is firm and medium in size. Hoovers are black, flint-like and exceptionally hardy. Skin exudes an oily secretion which protects the animals from heavy rain. Milk yield averages 530 kg

(range 32 to 1,228 kg) in an average lactation period of 269 days (range 100 to 396 days). Average fat in milk is 4.3%.

डांगी

यह नस्ल मुख्य रूप से महाराष्ट्र के नासिक एवं अहमदनगर जिलों में तथा पश्चिमी घाटों पर पायी जाती है। यहीं से इसका नाम डांगी पड़ा है। ये नस्ल विशेष रूप से अपनी कार्यकुशलता के लिये जानी जाती है क्योंकि यह अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में भी कुशलता पूर्वक कार्य करती है। विचरणशीलता इस नस्ल की विशेषता है। इनका पालन मुख्य रूप से कन्दाडी, महदेव कोली, ठाकर एवं मराठा जतियों द्वारा किया जाता है। ये जातियाँ वर्ष में लगभग ६ महीने (जनवरी-सितम्बर) अपने गांवों से बाहर ही विचरती हैं तथा एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर पलायन करती रहती है। गर्म व शुष्क मौसम

में ये अपने पशुओं के साथ तटीय क्षेत्रों की ओर चले जाते हैं जहां घास-पेड़, पौधे एवं पानी मिल जाता है। भारी वर्षा एवं जाड़ों के समय में ये लोग पहाड़ी क्षेत्रों की तलहटी में रहना पसन्द करते हैं। इस नस्ल का रंग सफेद परतदार होता है। गायों के शरीर पर लाल या काले रंग के धब्बे असममित रूप से रहते हैं। पशुओं का शरीर मध्यम आकार का गहराईदार होता है। सिर छोटा होता है तथा गले की झालर लटकी हुई प्रतीत होती है। कान छोटे होते हैं तथा कूबड़ मध्यम आकार का होता है। सींग छोटे व मोटे होते हैं। खुर काले रंग के व थोड़े कठोर होते हैं। त्वचा से एक प्रकार का तेल निकलता है जोकि भारी वर्षा से शरीर की रक्षा करता है। दुग्ध उत्पादन की क्षमता प्रति १००-४०० दिनों के दुध उत्पादक काल में १२०० से १२५० किग्रा होती है। दुध में वसा लगभग ४.३ % होती है।



DEONI

Deoni is an important dual-purpose breed of cattle in Maharashtra. These animals are mainly found in the Latur district and the adjoining area of Prabhani, Nanded and Osmanabad districts of the Marathwada region of Maharashtra. The name of the breed is derived from Deoni Taluk of the Latur district. Deoni is a medium heavy animal. It is found in three colour variations viz. Wannera (clear white with black colour at the sides of the face), Balankya (clear white with black spots on the lower side of the body) and Shevera (white body with irregular black spots). The body is moderately developed and symmetrical with distinct muscles. The colour of the head is black and white in Wannera and Shevera and completely white in the Balankya strain. The forehead is prominent, broad, slightly bulged and white in all the strains; ears are long and drooping with slightly curved tips; horns are medium, thick, apart and emerge from the sides of the poles; tips of the horns are blunt; and eyes are prominent, bright and alert with black eyebrows. The neck is short, strong and well developed. Dewlap is thick, pendulous, and muscular with folds. It is more pendulous in males than in females. The tail is long reaching below the hock with black and white switch. The udder is well attached and medium in size with squarely placed black teats. The animals are docile and calm. Deshpande and Singh (1977A) observed lactation milk yield in Deoni herds ranging from 800 to 1000 kg. Sontakke et al. (1978) reported average fat percent of 4.29 in 100 samples of Deoni cow milk.

देवनी

देवनी महाराष्ट्र में द्विउद्देशीय नस्ल के रूप में विख्यात है। यह नस्ल मुख्य रूप से लातूर एवं उसके साथ लगे जिलों में जैसे परभणी, नांदेड़ एवं उस्मानाबाद में पायी जाती है। इसका नाम लातूर जिले की देवणी तहसील के नाम पर पड़ा है। यह एक मध्यम भारी पशु है। यह मुख्य रूप से तीन रंगों में मिलती है।

१. चेहरे पर दोनों ओर काले धब्बों के साथ पूर्ण सफेद रंग में,
२. शरीर पर नीचे के भाग में धब्बों के साथ पूर्ण सफेद रंग में,
३. धब्बेदार सफेद रंग में

इस नस्ल में पशुओं का शरीर गठा हुआ तथा मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। इनका माथा उन्नत, बड़ा तथा हल्का सा उठा हुआ एवं काले रंग का होता है। सींग काले लम्बे परन्तु सिरों पर हल्के से घुमावदार होते हैं। आंखें, उन्नत, चमकदार एवं बहुत संवेदनशील प्रतीत होती हैं। गर्दन छोटी परन्तु मजबूत होती है। गले की झालर मोटी, लटकी हुयी तथा झालरदार प्रतीत होती है। यह बैलों में गायों के अपेक्षा अधिक लटकी हुई होती है। पूंछ लम्बी होती है तथा काले सफेद रंग के सिरे से युक्त होती है। बाँक मध्यम आकार का एवं पूर्ण विकसित होता है जबकि थन काले रंग के वर्गाकार रूप में व्यवस्थित रहते हैं। पशु शान्त प्रकृति के होते हैं। एक ब्यांत के दुग्ध अन्तराल में ये गायें २००-१००० कि.ग्रा. दूध देती हैं। इनके दूध में वसा लगभग ३.०% होता है।



GAOLAO

The Gaolao is a dual-purpose breed reared for draught (mainly fast transportation) and milk production. This breed is found in Wardha district of Maharashtra; and Balaghat, Chhindwara, Durg, Rajnandgaon and Seoni districts of Madhya Pradesh. There is a close similarity between the Ongole and the Gaolao except that the latter is much lighter with greater agility. Herd size is normally 6 to 8 but some farmers have large herds. Animals are grazed in the grasslands preserved by the forest department. Grazing is usually available from middle of July to the end of October. Sorghum is the principal crop of the area. Grains are used for human consumption while the stover is fed to cattle. Cows and young stock are usually undernourished but bullocks and young male calves ready for sale are well fed. Cotton seed, linseed or groundnut is given as concentrates. Bullocks are particularly trained to run fast. Gaolao animals are white or light grey. Males are generally grey over the neck, hump and quarters, medium sized, light built, narrow and long. Head is markedly long and narrow usually tapering towards the muzzle. Forehead is usually flat, though it appears to recede at the top, giving a slightly convex appearance. Eyes are almond shaped and placed slightly at angles. Ears are of medium size and carried high. Horns are short and stumpy, blunt at the points and curve slightly backward. Hump is well developed, loose and hangs on one side. Dewlap is voluminous but the sheath is moderately developed. Tail is short, reaching just

below hocks. Average body weight is around 430 kg in males and 340 kg in females. Average age at first calving is around 1,300 days. Milk production is about 600 kg (range 470 to 725 kg) in a lactation of about 240 days. Fat is about 5.5%. Average service period is around 93 days and calving interval around 387 days.

गवळाव

गवळाऊ यह भी द्विउदेदशीय नस्ल है, जो दूध व माल ढोने, दोनों कार्यों के लिये उपयोगी होती है। यह नस्ल महाराष्ट्र के वर्धा जिले में तथा मध्य प्रदेश के बालाघाट, छिंदबाड़ा, दुर्ग, राजनन्दगांव व सिवनी जिलों में विशेष तौर पर पायी जाती है। ओन्नोल व गवळाऊ में बहुत अधिक समानतायें पायी जाती हैं। यह ओंगोल से हल्की तथा अधिक चन्चल होती है। ये चारागाहों में चरना अधिक पसन्द करती है। इस नस्ल के पशु सफेद अथवा



हल्के भूरे रंग के होते हैं। बैलों का रंग गर्दन के ऊपर कूबड़ तथा चतुर्थांश पर भूरा होता है। कद मध्यम आकार का, शरीर हल्का संकरा व लम्बा होता है। सिर लम्बा एवं संकरा नाक की ओर को ढलवाँ होता है। माथा चपटा तथा उन्नत होता है। आंखें बादाम की आकृति की एवं एक कोण पर झुकी हुई होती हैं। कान मध्यम आकार के एवं ऊंचे होते हैं। सींग छोटे व विकेट के आकार के होते हैं तथा आगे से मोटे व कुन्द होते हैं। कूबड़ इतना बड़ा होता है कि एक तरफ से झुका व ढीला दिखायी देता है। गले की झालर पूर्णतः विकसित होती है। पूंछ छोटी होती है। पशु के शरीर का औसत वजन ३४०-४३० किग्रा होता है। १३०० दिन = लगभग ३-४ वर्ष की उम्र पर ही गाय प्रथम बार दुधारू हो जाती है। इसका दुग्ध उत्पादन लगभग ४७० से ७२५ किग्रा एवं दुध अंतराल लगभग २४० दिन का रहता है। इसके दुध में वसा लगभग ५.५ % रहता है।

GANGATIRI

Animals of this breed are reared for milk production as well as for agricultural operations. The animals are kept in open or *Kachcha* (*Chhapper*) houses nearby the farmers' houses. The floor of the animal houses was generally *Kachcha*. The drainage of animal houses was poor. The animals are kept for grazing for a period of 6-8 hours in a day. The concentrate feeding/ Balanced feeding was rarely observed, however, paddy straw along with little amount of concentrate was given to cows at the time of milking and also to the bullocks. The breeding in about 95% cases was through natural mating and only 5% animals were bred through A.I. The A.I. programme in the area included the semen of Holstein Friesian breed only. The facility of Gangatiri bull semen was not available in the area. The farmers were well aware of signs of oestrus and significance of A.I. The herd size varied from 2 to 50 animals. Large herds were maintained in the *diyara*, the area adjacent to the river Ganga and kept only on grazing i.e. zero input system. In villages farmers generally keep 2-3 cows and a pair of bullock. The communities mainly responsible for developing the breed include *Yadav*, *Pal* and *Dushad*. However, all the communities are rearing the breed. The rich farmers preferred to have crossbred animals. High tolerance to drought and heat was found in Gangatiri animals. Animals are fit for ploughing, threshing and power works.

गंगातीरी

गौवंश के इस प्रजाति का दूध निर्माण और कृषि-कार्य के लिए पालन किया जाता है। इन प्रजाति को खुला अथवा कच्चे घरमें (छप्पर युक्त) कृषक के घर के बगल में ही रखा जाता है। इसकी जमीन कच्चे माल की रहती है। इनके लिए प्रयुक्त निकास व्यवस्था बहुत निम्न दर्जेकी रहती थी। इस प्रजाति को दिन में 6 से 8 घंटोंतक चरने के लिए छोड़ा जाता है। घन द्रव का खाद्य अथवा संतुलित पशु आहार कम ही दिया जाता है। फिर भी मोटे घास, उसके साथ घनाहार भी दूध निकालते समय गायों को देते हैं जैसे ही बैलों को भी दिया जाता है। 95 प्रतिशत प्रजनन नैसर्गिक प्रक्रिया से किया जाता है और सिर्फ 5

प्रतिशत प्रजनन कृत्रिम रेतन प्रक्रिया से निर्माण किये जाते हैं। कृत्रिम रेतन प्रजनन की इस प्रदेश में प्रक्रिया में हॉलेस्टियन और फ्रीझियन प्रजाति का ही रेत उपयोग में लाते हैं। गंगातीरी साँड के रेत की उपलब्धि इस प्रदेश में नहीं थी। oestrus के लक्षण और कृत्रिम रेतन का महत्त्व यहाँ के कृषक जानते थे। गोवंश के एक झुंड में 2 से 50 संख्या रह सकती है। 'दियारा' - भूभाग जो गंगा किनारे है और सिर्फ चरनेपर ही प्रजाति को रखते हैं अर्थात् लागत 'शून्य' रहती है ऐसी बड़ी झुंड पालते हैं। गाँवों में कृषक 2-3 गायें और बैलों की एक जोड़ी रखते हैं। यादव, पाल, दुशाद नाम की जातियाँ मुख्यरूप से इन नस्लों के वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। धनिक कृषक संकरित प्रजातियों को पसंद करते हैं। धनिक कृषक संकरित प्रजातियों को पसंद करते हैं। अकाल बरदाश्त करने की बहुत शक्ति और अति उष्णता सहन करने की शक्ति गंगातीरी प्रजाति में रहती है। जमीन मशागत के लिए, खलिहान के कामों में और शक्ति के काम में ये अपना योगदान बखूबी से देते हैं।



GHUMSARI

GHUMSURI BREED : The Ghumsuri Breed of cattle is distributed in and around the Bhanjanagar (Ghumsar) sub-division of Ganjam. The breed with a beautiful look varies from silver grey to white in skin colour. Body is generally small/ and compact. The head is small and flat with broad forehead; horns are short to/ medium which curve outward, upward and inward. Well developed humps with medium sized tubular ears. Dewlap is thin and short and legs are medium in length, well proportioned with deep black round hooves. Tail is thin with black switch. Udder is small with small teats with less prominent milk veins. Cows are generally docile and the bullocks are good draft animals. A pair of Ghumsuri bullocks can work eight hours a day with an ability to plough around 4000 sq.mtrs and pull a cart load of about 800 to 1200 kgs.

These animals are rarely fed with concentrate feed. They are normally tied on wooden pegs in the open under trees during the night almost throughout the year. During rainy season these animals are confined to thatched sheds. During day time they are let loose in herds for grazing across the river embankments, hillocks and open fields. The cows are milked once early in the morning prior to letting them for grazing.

The population of these lesser known breeds of Ghumusuris is in decreasing trend day by day due to indiscriminate breeding system. The present population of this cattle type is less than 10,000 in the native tract and is further decreasing at faster rate. To initiate the conservation and improvement process of these valuable Ghumusuri cattle germplasm, selective breeding can bring sustained development in productivity and economic importance of these animals in its native tract resulting in conservation.



घुमसारी

गायों की घुमसारी नस्लें भंजानगर (घुमसार) जो गंजाम का उप-प्रादेशिक विभाग में आता है उनमें अथवा उसके आसपास के प्रदेश में बिखरी हुई हैं। ये नस्लें सुंदर और चंदेरी भूरी से लेकर सफेद रंग के खाल की रहती हैं। सामान्यतः शरीर छोटा और सुसंगठित रहता है। सिर छोटा और माथा चौड़ा रहता है। सिंग छोटे से मध्यम और बाहरी, ऊपरी और अंदरूनी वक्रता से युक्त रहते हैं। पुष्ट ककुंद और मध्यम आकार के नलीदार कान रहते हैं। गलकंबल पतली और छोटी और पैर मध्यम लंबाई के, सुंदर अनुपात में, गाढ़े काले खुरों से युक्त रहते हैं। पूँछ पतली, काले अंतिम सीरे से युक्त होती है। छोटे थन, छोटे स्तनाग्र युक्त और कम दुग्धवाहिनी सिराओं से युक्त रहते हैं। घुमसारी बैलों की एक जोड़ी दिन में 8

घंटे काम कर सकती हैं और 4000 चौ. मीटर की जमीन हलसे पेंड, पौधे लगाने लायक कर सकते हैं, लगभग 800 से 1200 कि. ग्रॅ. का वजन भरी हुई बैलगाड़ी को खींच सकते हैं।

इन को बहुत कम ही गाढ़े द्रव्यों से खिलाया जाता है। लगभग पूरे वर्ष में रातको उन्हें एक खुटी से वृक्ष के नीचे खुला ही बांध देते हैं। बारीश के मौसम में एक छप्पर के नीचे उन्हें बांधा जाता है। दिन के समय नदियों के बाँधपर, पहाड़ियों पर, खुले जमीनपर छोड़ दिया जाता है। पहले चरने को छोड़कर गायों को एकबार सबेरे दुहते हैं। अपरिचित घुमसारी नस्लों के प्रजाति की संख्या उनके मनचाहे प्रजनन प्रक्रियाओं से दिन-दिन में कम होती जा रही है। स्थानिक भूभाग में इस प्रजाति की संख्या 10,000 से भी कम है और बहुत शीघ्र गति से और भी कम हो रही है। ये नस्ल सुरक्षित रखने के लिए और इस मूल्यवान घुमसारी प्रजाति में सुधार लाने के लिए चुनावी नस्लों से प्रजनन दर बढ़ा सकते हैं और स्थानिक भूप्रदेश में आर्थिक महत्त्व प्राप्त होकर लोग उनका संरक्षण रने में बाध्य होंगे।

GIR

The Gir is a famous milk cattle breed of India. The native tract of the breed is Gir hills and forests of Kathiawar including Junagarh, Bhavnagar, Rajkot and Amreli districts of Gujarat. The Gir animals are famous for their tolerance to stress conditions and resistance to various tropical diseases. Bullocks of this breed are used to drag heavy loads on all kinds of soil. Brazil, Mexico, USA and Venezuela have imported these animals where they are being bred successfully. These animals contribute significantly to the total milk production of Gujarat State. The Rabaris, Bharwads, Maldharis, Ahirs and Charans tribes are mainly involved in Rearing of Gir cattle. They move with their cattle from one place to another in search for grazing. The Gir animals are also kept at different Gaushalas (cow barns) in Gujarat State.

The coat colour of Gir animals varies from shades of red and white to almost black and white or entire red. Skin colour is dominantly black but in a few animals it is brown. Forehead is prominent, convex and broad like a bony shield. This overhangs eyes in such a way that they appear to be partially closed and the animal shows sloppy appearance. Ears are long and pendulous and folded like a leaf with a notch at the tip. Horns are curved turning back at the tip.

They orient downwards and backwards from the base and incline a little upwards and forwards. The tail is long and whip like, hooves are black and medium-sized, hair is short and glossy, skin is loose and pliable, hipbones are prominent, the body is well proportioned, the udder in cows is well developed and teat tips are round. Heifers received a lesser number of artificial inseminations for successful conception than cows. Singh et al. (1981) observed age at first calving in Gir cows as 52.49 months. Ulmek and Patel (1993a) reported average lactation and 300 days milk yield in 378 Gir cows as 1775 and 1449 kg, respectively.

गीर

गीर भारत की एक प्रसिद्ध दुधारू नस्ल है। इसकी उत्पत्ति, विचरण व प्राप्ति क्षेत्र गीर की पहाड़ियों, काठियावाड़ के जंगल, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट एवं गुजरात के अमरेली जिले में हैं। इस नस्ल के बैल लगभग प्रत्येक प्रकार की भूमि पर भारी कार्य के लिये कुशल होते हैं। गुजरात राज्य के दुग्ध उत्पादन में इस नस्ल का विशेष योगदान है। इस नस्ल में लाल एवं सफेद तथा काले सफेद या पूर्ण रूपसे लाल रंग के बालों वाले पशु मिलते हैं। त्वचा का रंग काला या भूरा होता है। माथा विकसित चौड़ा तथा उन्नत होता है। इसकी आँखों की स्थिति ऐसी होती है कि लगता है जैसे पशु आँख मूँद कर खड़ा हो। पूँछ लम्बी व खुर काले व मध्यम आकार के होते हैं। कान लम्बे व लटके हुये तथा अग्र भाग पर गोलाई लिये हुये व ऐंठे हुये होते हैं। कानों के अग्रभाग पर एक कटाव रहता है। सींग मुड़े हुये एवं अग्रभाग पर पीछे के ओर झुके हुये रहते हैं। त्वचा ढीली व परतदार प्रतीत होती है। शरीर आनुपातिक रूप से भारी प्रतीत होता है। इस नस्ल की गायों में बाँक पूर्ण विकसित होता है तथा थन गोलाई लिये हुये होते हैं।



HALLIKAR

Hallikar cattle is typical Mysore type of cattle found mainly in Mysore, Mandya, Bangalore, Kolar, Tumkur, Hassan and Chitradurga district of Karnataka. It is one of the best draught breed of southern India. In the entire tract bullocks are given special attention. Price of each bullock ranges from Rs. 5,500 to Rs 10,000. This is probably the only consideration for personal attention in the feeding and management of the males. Females are being used for all kinds of farm operations. They can also work in water logged fields and contribute to the farming system.

Color is grey to dark grey with deep shading on the fore and hind quarters. Frequently, there are light grey marking on the face, dewlap and under the body. Hallikar cattle are medium sized, compact and muscular in appearance. The forehead is prominent giving a slight bulgy appearance and is furrowed in the middle. The face is long and tapers towards the muzzle, which is usually grey to black. Horns emerge near each other from the top of poll and are carried backward, each in a straight line for nearly half their length and then with a gentle and graceful sweep bend forward and slightly inward toward the tips which are black and sharp. Horns almost touch the neck in front of hump when the animal is feeding with its head downward. Eyes are small and clear.

Ears are small tapering to a point. Dewlap is thin and moderately developed. Sheath is very small and is tucked up with the body. Tail is fine with a black switch which reaches little below hocks. Age at first calving ranges from 915 to 1,800 days with an average of about 1,370 days. Lactation milk yield is around 540 kg ranging from 227 to 1,134 kg. Lactation length ranges from 210 to 310 days averaging of about 285 days. Fat is about 5.7%. Average calving interval is 598.9 ± 27.36 days.



हल्लीकर

यह एक मजबूत शरीर वाली नस्ल है जो कि कर्नाटक के मैसूर, मांडया, बैंगलोर, कोलार, तुमकुर, हासन एवं चित्रदुर्ग जिलों में पायी जाती है। यह दक्षिणी भारतीय नस्लों में सर्वोत्तम नस्ल है। इस नस्ल के बैल विशेष रूप से उपयोगी होते हैं, जो खेती के लगभग सभी क्रिया-कलापों में उपयोगी रहते हैं। पानी के भराव वाले क्षेत्रों में भी ये अच्छी प्रकार कार्यशील रहते हैं। इन का रंग भूरा या गहरा भूरा होता है। यह नस्ल मध्यम आकार की तथा मांसल सी प्रतीत होती है। मस्तक वाला

भाग उन्नत होता है। चेहरा लम्बा व नाक की ओर झुकाव वाला होता है। नाक सामान्यताया काले या भूरे रंग की होती है। सींग लम्बे व सिरों पर एक दूसरे की ओर मुड़े हुये रहते हैं। इनका झुकाव पीछे की ओर रहता है। आँखें छोटी होती हैं। कान छोटे तथा झुकावदार होते हैं। गले की झालर छोटी व कम लटकाने वाली होती है। पूंछ लम्बी काले सिरे वाली होती है तथा पिछले पैरों के जोड़ से नीचे तक लटकी रहती है। इसका प्रथम ब्यांत का समय औसतन 9370 दिन का होता है। तथा दुग्ध उत्पादन 200 से 9900 किग्रा तक होता है। इसके दुग्ध में वसा लगभग 5.7 % होता है।

HARIANA

Hariana, a prominent dual-purpose breed of northern India, was primarily reared for bullock production. Its breeding tract encompasses large parts of Rohtak, Hisar, Jind and Gurgaon districts of Haryana. These animals are also reared in Jodhpur, Alwar, Loharu and Bharatpur districts of Rajasthan. Meerut, Bulandshahar and Aligarh districts of western Uttar Pradesh also have sizable population of this breed. This is one of the most widely spread breed in the Indo-Gangetic plains. According to some reports the purebred Hariana cattle were abundant in Jhajjar, Beri and Jahajgarh pockets of Rohtak district. Hariana animals are white or light-grey in colour. In bulls, colour in between fore and hind-quarters is relatively dark or dark grey. Skin is black. Hariana cattle have compact and proportionately built body. They are characterized by a long and narrow face, flat forehead and a well marked bony prominence at the centre of the poll. They have small horns. Muzzle is usually black. Eyes are large and prominent. Typical animals have black eyelashes. Head is carried high and gives them a graceful appearance. Hump is of medium size in cows and large in males. Legs are moderately long and lean with small, hard and well shaped feet. Sheath is small. Udder is capacious and extends well forward with a well-developed milk-vein. Teats are well developed proportionate and medium sized. Tail is rather short, thin and tapering. There is black switch reaching just below hocks. A coat colour other than white or grey as well as white switch of tail is considered a marked deviation from the typical attributes and a disqualification from the stand point of breed registration. Adult body weight is around 499 and 325 kg in males and females respectively. Age at first calving ranges from 1,067 to 1,809 days with an average of 1,567 days. Average milk yield is around 997 kg with a range of 692 to 1,754 kg. Lactation length is about 272 days ranging from 238 to 330 days. Average service period is 232 days (range 126 to 305 days), dry period 255 days (range 133 to 571 days) and calving interval 483 days (range 415 to 561 days).

हरियाणा

यह उत्तरी भारतीय क्षेत्र की विशिष्ट एवं द्विउद्देशीय नस्ल है। इसका एक प्रमुख उपयोग उच्च क्षमता के बैलों का उत्पादन है। इसके प्राप्ति एवं उत्पत्ति का क्षेत्र हरियाणा राज्य के रोहतक जिले के बड़े भाग में, हिसार, जीन्द एवं गुडगाँव है। इसके अतिरिक्त ये नस्ल राजस्थान के अलवर, जोधपुर, लोहारू, एवं भरतपुर जिलों में भी बहुतायत में मिलती है। उत्तर प्रदेश में यह हरियाणा से लगे एवं समीप वाले जिलों जैसे मेरठ, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर एवं अलीगढ़ तथा बिजनौर में मिलती है। यह गंगा के दोआब में सर्वाधिक प्रसारित नस्ल है। हरियाणा के झज्जर, बेरी व जहाजगढ़ में इस नस्ल की शुद्ध प्रजाति मिलती है। यह नस्ल सफेद या हल्के रंग की होती है। बैलों में अग्र एवं पार्श्व भाग में रंग गहरा होता है। इनका लम्बा एवं पतला

चेहरा इनकी विशिष्टता है। इस नस्ल में नाक सदैव काले रंग की होती है। इनका माथा चपटा तथा सींग छोटे, सिरों पर नुकीले तथा गोलाई लिये हुये सदैव अन्दर की ओर को झुके हुये होते हैं। आँखें काली एवं सुन्दर होती हैं। कुछ पशुओं में आँख की पुतली का भाग काला होता है। सिर ऊँचा एवं उन्नत तथा उठा हुआ होने के कारण एक विशिष्ट पहचान देता है। कूबड़ नर व मादा दोनों में होता है। लेकिन मादा में कूबड़ बहुत छोटा व नर में बहुत बड़ा (लगभग शरीर के अनुपात में) होता है। पैर लम्बे पतले सुदृढ़ तथा सुन्दर होते हैं। खुरों का रंग काला होता है। बाँक पूर्ण विकसित, बड़ा तथा दुग्ध नली पेट के निचले भाग में पूर्ण विकसित एवं उभरी हुई होती है। थन मध्यम आकार के पूर्ण विकसित तथा अनुपातिक रूप से सुदृढ़ होते हैं। पूंछ छोटी एवं पतली तथा झुकाव वाली होती है। वयस्क नर पशुओं का वजन लगभग ५०० कि.ग्रा. व मादा का ३२५ कि.ग्रा. तक पाया जाता है। औसतन प्रथम ब्यांत का समय १५६७ दिन रहता है। इससे लगभग ६५० से १७५० कि.ग्रा. तक दुध एक दुध उत्पादन समयान्तराल में, जो कि २४० दिन से ३३० दिन का हो सकता है, मिलता है।



KANGAYAM

Kangayam is a draught breed of cattle and distributed in Kangayam, Dharapuram, Perundurai, Erode, Bhavani and part of Gobichettipalayam taluks of Erode district, Dindigul, Karur and Coimbatore district. On the other hand, replacement of Kangayam cattle by exotic crosses is high in Udumalpet, Pollachi, Palladam and Tirupur taluks of Coimbatore, and Erode district. This breed is most closely related to the Umblachery breed of cattle. Kangayam animals are well built and heavier than Umblachery cattle and are found in drier climate, whereas Umblachery are found in the hot humid tract. Kangayam cattle are maintained under semi-intensive system of management. They are traditionally reared on grazing in dry lands kept as pasture land by farmers for cattle and sheep in the breeding tract. Coat is red at birth, but changes to grey at about 6 months of age. Bulls are grey with dark colour in hump, fore- and hind-quarters, face and legs. Bullocks are grey. Cows are grey or white and grey. However, animals with red, black, fawn and broken colour are also observed. Such animals comprise approximately 1 to 2 % of the total population. Horns, muzzle, eyelids, tail switch and hooves are black. Skin is also black. Animals are strong and active with compact body. Legs are short and stout with strong hooves. Bullocks are capable for carting with load on a sunny cloudless summer day with ambient temperature of 30 to

35 degree Celsius. Milk yield ranges from 600 to 800 Kg with an average of about 540 Kg in a lactation of about 270 days. Average fat and SNF is 3.88 + 0.07 and 6.96 + 0.05 % respectively.



कांगायाम

कांगायाम नस्ल मुख्यतः कांगायम, धर्मपुरम, पेरुनदुरई इरोड़, भावानी, एवं इरोड़ जिले के गोबीचोट्टिपालायम् तहसीलों (तालुकाँ) में पायी जाती है। इसके अतिरिक्त यह डिंडीगुल, कारूर एवं कोयमबटूर जिलों में भी पायी जाती है। यह नस्ल उम्ब्लाचेरी नस्ल से बहुत समानता रखती है लेकिन कांगायम सुदृढ़ कद-काठी एवं भारी शरीर की नस्ल है तथा अपेक्षाकृत शुष्क

स्थानों में पायी जाती है, जबकि उम्ब्लाचेरी नस्ल आर्द्र स्थानों पर मिलती है। कांगायम नस्ल सामान्यता चारागाहों में चरती रहती है। जन्म के समय इनका रंग लाल परंतु ६ महीने पश्चात सलेटी हो जाता है। कूबड़ तथा पैरों के संधि स्थलों पर रंग गहरा सलेटी होता है, जबकि शेष भाग पर साँडों का रंग लाल या काला एवं बैलों का रंग सलेटी मिलता है। इन नस्लों में सींग, नाक, भौंहें, पूंछ के सिरे एवं खुरों का रंग काला होता है। साथ ही त्वचा का रंग भी काला होता है। पशु गठीले शरीर एवं मजबूत कद-काठी वाले होते हैं। पैरों की लम्बाई कम होती है। जबकि खुर मजबूत होते हैं। बैलों में उच्च तापमान २५° से ३०°C वाले गर्मी के दिन में भी कार्य करने की क्षमता होती है। इनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता लगभग ६००-८०० किग्रा प्रति ब्यांत एवं दुग्ध उत्पादन समयान्तराल २७० दिनों का होता है। इस नस्ल में दूध में वसा का प्रतिशत ३.८ से ७.० % तक होता है।

KANKREJ

Kankrej cattle have had the important impact on U.S. cattle breeding. Kankrej cattle are gray cattle of northern India and have long, lyre shaped horns. They are among the largest cattle of India and are prized as powerful draft animals and are moderate milk producers. Having short broad faces with long ears drooping and open to the front. Color varies from light gray to black at maturity. The barrel is generally lighter in color than the rest of the body, especially in bulls. Bulls tend to get darker than cows or steers. Kankrej cattle are maintained as a pure breed in India and Brazil in large numbers, with a few in the U. S. The Kankrej was the most important breed in the formation of the American Brahman. A literature review of these and other Indian breeds in India, Brazil, Mexico and the U. S., would indicate production characteristics similar to the American Brahman and other *Bos indicus* breeds with lower birth weights in purebreds than *Bos taurus* breeds. Like all *Bos indicus* breeds the Kankrej adds environmental adaptability to tropical and subtropical conditions, insect tolerance and some disease resistance, longevity, and maternal ability, especially in crosses with *Bos taurus* breeds. The cattle are gentle without a disposition problem and are fertile under adverse conditions. The gait of Kankrej is peculiar to the breed, the action is smooth, and there is hardly any movement of the body. The gait is called one fourth paces (sawai chal) by the breeder. Average milk yield is around 1,746 kg (range 1,097 to 3,194 kg). Lactation length averages 294 days (range 257 to 350 days), calving interval is around 490 days, and fat is around 4.8% (range 4.66 to 4.99%).

कांकरेज

इस नस्ल ने संयुक्त राज्य अमेरिका के गोवंश के संवर्धन में विशिष्ट भूमिका निभायी है। यह पश्चिम भारत की सलेटी रंग की नस्ल है। इसके सींग लम्बे एवं गोलाई लिये हुये बड़े आकार के होते हैं। यह भारत की सबसे बड़ी नस्ल है। इसका चेहरा छोटा परन्तु कान लम्बे एवं चेहरे की ओर को झुके हुये रहते हैं। बड़े होने के साथ रंग हल्का सलेटी से गहरा काला होता जाता है। साँड़ों का रंग अन्य पशुओं के अपेक्षा गहरा होता है। यह एक सीधी एवं खराब से खराब परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालने वाली नस्ल है। यह शान्त स्वभाव के साथ चाल-ढाल में भी शान्त है। इसकी चाल अन्य नस्लों के अपेक्षा सवाई है। इसमें दुग्ध उत्पादन 9900 से 3200 किग्रा प्रति ब्यांत होता है तथा दुग्ध उत्पादन अन्तराल लगभग 260 दिन (260 से 350 दिन) का होता है। इसके दूध में 4.8% तक वसा मिलती है। यह नस्ल मुख्यतः गुजरात राज्य में पायी जाती है।



KENKATHA

The Kenkatha cattle take their name from the River Ken, for they are bred along the banks of this small river in the area of Bundelkhand comprising Lalitpur, Hamirpur and Banda districts of Uttar Pradesh, and Tikamgarh district of Madhya Pradesh. This breed is similar to the Malvi breed.

The Kenkatha cattle are small, sturdy and fairly powerful, varying in colour from grey on the barrel to dark grey on the rest of the body. Head is short and broad. Forehead is dished. Horns emerge from the outer angles of poll in a markedly forward direction and terminate in sharp points. Ears are sharply pointed and do not droop. Body is short, deep and compact. Hump is well-developed. Sheath is somewhat pendulous and ends with a black tip.

Dewlap is moderately heavy. Tail grows beyond hocks.



केन्काठा

केन्काठा केन नदी की घाटी में उत्पन्न एवं संवर्धित होने के कारण है इस नस्ल का नाम केन्काठा पड़ा है। यह मुख्य रूप से बुन्देलखण्ड के ललितपुर, हमीरपुर एवं बांदा (उ०प्र०) तथा मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिलों में पायी जाती है। यह मालवी नस्ल के समकक्ष है। इस नस्ल के पशु छोटे, सुन्दर, सुदृढ़ कद काठी वाले एवं

मजबूत होते हैं। इनका रंग गर्दन पर सलेटी तथा शेष शरीर का रंग गहरा सलेटी होता है। सिर छोटा व चौड़ा होता है। माथा गोलाई लिये हुये होता है। सींग गोलाई लिये हुये अन्त में नुकीले परन्तु वाह्य दिशाओं की ओर प्रक्षेपित रहते हैं। सींग का सिरा नुकीला व गोल होता है। कान तीक्ष्ण कटाव वाले एवं शरीर की दिशा में होते हैं। शरीर छोटा गहराबदार एवं संरचनात्मक रूप से मजबूत होता है। कूबड़ पूर्ण विकसित होता है। गले की झालर लटकती एवं सिर पर काले रंग की होती है।

KHARIAR

Khariar Cattle: The name of 'Khariar' breed has been derived from the place of its origin, the Khariar region in Nuapada district in Orissa. Good number of these animals are found in Khariar, Sinapalli and Boden area in Nuapada district. The adjoining areas in Kalahandi and Bolangir district also harbor a few animals of this breed. The coat colour of Khariar cattle ranges from light brown to grey with unique orientation of horn. Khariar is basically a draft animal. The bullocks are very good draft animals are prepared in and around the native tract for agricultural operation and transportation. However, the cows produce considerable quantity of milk, often used for family consumption and even marketed at times. Khariar cattle have many good qualities like adaptability to low input system of management, heat tolerance, low incidence of diseases and good draft capacity. Keeping in view the economic importance, productivity, draft ability and adaptability of Khariar cattle in its native tract along with the socio-economic status of the farmers, efforts should be made for conservation and improvement of this valuable germplasm through selective breeding.

खरियार

ओरिसा के नौपाडा जिले से खरियार प्रदेश से इसका मूलस्थान रहने से इस नस्ल का नाम 'खरियार' रखा है। खरियार, सिनापल्ली और बॉदेन ये प्रदेश जो नौपाडा गया जिले में हैं वहाँ ये वंश अधिक संख्या में पाया जाता है। उससे लगत के कलाहांडी और बोलांगिर जिले ने भी इन नस्लों को अपने प्रदेश में लाकर विकसित किया है। खरियार नस्लों की खाल हलके भूरे रंग से राख के

रंग तक दिखती हैं। इनके सिगों का विशिष्ट उगम दिखता है। ये मूलतः शक्तिमान प्राणि हैं। (भारवाही)। उन्हें उस प्रदेश में अथवा उस परिवेशमें ही कृषि – कार्य में और परिवहन के कामों में तैयार किया जाता है। तथापि इनकी गाँ लक्षणीय प्रमाण में दूध देती हैं, प्रायः परिवार में उपयोग में दूध लाया जाता है; कभी कभी बाजार में भी बिक्री के लिए लाया जाता है। खरियार नस्लों के कुछ अच्छे गुणधर्म हैं, जैसे कम लागत में उनका व्यवस्थापन हो सकता है, उष्णता सहन करने की क्षमता ज्यादा होना, रोग होने की संभावना कम होना और अच्छी भारवाही क्षमता होना। आर्थिक महत्त्व ध्यान में रखते हुए, उनकी पैदास, शक्ति क्षमता और स्वदेशी परिवेश में कृषक का सामाजिक – आर्थिक स्तर भी ध्यान में रखते हुए इस मूल्यवान गोवंश का चुनावी पैदावार बढ़ाकर इन नस्लों को बचाने का प्रयास करना चाहिये।



KHERIGARH

Kherigarh breed is closely allied to the Malvi breed. This breed is mostly found in the Lakhimpur-Kheri district of Uttar Pradesh, but some animals are also found in the adjoining Pilibhit district. This breed has been named after the area. The local people, however, do not know anything about its name and just call it as desi. Population of Kherigarh breed has decreased considerably over the last few years because of large scale deforestation for crop production. The grazing areas are now restricted to roadsides and canal banks only.

Kherigarh cattle have white coat colour. Some animals have grey colour distributed all over body especially on face. They grey colour might have appeared due to interbreeding among different breeds. These are small-sized, very active animals, reared mainly for draught purpose. Face is small. Forehead is flat and broad. Eyes are large, bulging and bright. Horns are medium (about 15 cm) and upstanding, curving outward and upward. These are thick at the base. Horn formation is typical of the lyre-horned Malvi type. Animals of this breed are much lighter in general appearance than the Malvis. Ears are small and horizontal. Muzzle is black. Neck is short. Hump is small in females and medium sized in males. Dewlap is thin and pendulous, starts from right under the chin and continues up to brisket. Legs are light and straight. Hooves are small and black. Tail is long almost touching the ground and ending in a black switch. Udder is small and tightly attached with the body. Teats are small and cylindrical. Skin is

slightly loose and black. Bullocks are very good for draught purposes. They run very fast. Cows are poor milkers. They produce about 1 to 1.5 liters of milk in a day for about one year. A weekly animal fair is held at Dhubagha, Lakhimpur - Kheri for trade of only male animals.

खेरीगढ़

यह नस्ल मालवी नस्ल के समतुल्य होती है। यह उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले में प्रमुखता से पायी जाती है, लेकिन कुछ उपस्थिति पीलीभीत में भी मिलती है। खीरी जिले के नाम पर इसका नाम खैरीगढ़ पड़ा है। इसकी त्वचा का रंग सफेद अथवा सलेटी होता है। इस नस्ल का आकार छोटा होता है। यह काफी चंचल नस्ल है

तथा परिवहन के लिये मुख्य रूप से उपयोगी है। चेहरा छोटा, माथा चौड़ा व सपाट होता है। आँखें बड़ी व चमकदार तथा उभरी हुई होती है। सींग मध्यम आकार के एवं ऊपर की ओर को खड़े हुये रहते हैं। ये नस्ल मालवी के अपेक्षा हल्की प्रतीत होती है। गायों में कूबड़ छोटा व बैलों में मध्यम आकार का होता है। गले की झालर सीधे ठोड़ी के नीचे से प्रारम्भ होती हुई लटकी एवं पतली होती है। पैर हल्के व सीधे होते हैं। पूंछ धरती को छूती हुई होती है तथा अन्तिम छोर काले रंग का होता है। बाँक छोटा व शरीर के साथ सटा हुआ होता है। थन छोटे व गोलाई लिये हुये होते हैं। त्वचा थोड़ी सी काली व ढीली होती है। खुरों का रंग काला व आकार छोटा होता है। बैल बहुत उपयोगी होते हैं। गायें कम दूध देती हैं। ये सालभर में 9 से 9.5 लीटर दूध प्रतिदिन देती हैं।



KHILLARI

Khillari breed of cattle is known for quick draught capabilities of its bullocks. This breed is found in Kolhapur, Solapur, Sangli and Satara districts of Maharashtra and Belgaum, Bijapur and Dharwad districts of Karnataka. This breed is seemed to have originated from Hallikar or Amrithmahal breed of cattle.

A typical Khillar animal is compact and tight skinned, with clean cut features. Appearance is like a compact cylinder with stout, strongly set limbs. There is a slight rise in the level of back toward the hook bones. A groove runs in the center of the forehead from the nasal bridge to of the poll. Face is lean and long with smooth, tightly drawn skin. Ear is small, pointed and always held sideways. Horns are long and pointed. Dewlap is light with very few folds. Hump in male is firm and moderate size. Khillar bullocks are highly valued as fast powerful draught cattle, for they can travel miles without showing any sign of fatigue. Cattle of this breed are exported to north - western Shri Lanka to improve draught qualities of Sinhala breed. Cow producing average milk of 384 kg (range 240 to 515 kg).

खिल्लारी

यह नस्ल अपने बैलों की उपयोगिता के लिये जानी जाती है। यह महाराष्ट्र के कोल्हापुर, सोलापुर, सांगली व सातारा जिलों तथा कर्नाटक के बेलगोव, बीजापुर एवं धारवाड़ जिलों में मिलती है। यह मुख्यतः हल्लीकर एवं अमृत महल नस्लों के संकरीकरण से प्राप्त हुई प्रतीत होती है। शरीर गठीला व स्थूल, चेहरा लम्बा, झुका हुआ व कसी हुई त्वचा के साथ मुलायम प्रतीत होता है। सींग लम्बे व नुकीले होते हैं। सींग का

ढाल पीछे की ओर परन्तु सिरों का प्रक्षेपण आगे की ओर वक्राकार होता है। कान छोटे होते हैं। गले की झालर हल्की व कम मोड़दार होती है। नर पशुओं में कूबड़ विकसित एवं सुदृढ़ आकार का होता है। इस नस्ल के बैल परिवहन के लिये काफी उपयोगी रहते हैं। गाय २४० से ५१५ कि.ग्रा. तक दूध का उत्पादन करती है।



KOSALI

Cattle-Kosali

Kosali is small sized, draft purpose cattle breed of Chhattisgarh. Farmers prefer bullocks of this breed for cleaning of weeds from paddy field. Animals are known for very efficient working ability and high disease resistance



कोसाली

कोसाली नस्लें :-

कोसाली यह छोटे आकार की भारवाही छत्तीसगढ़ की नस्ल है। इस वंश के बैलों को सख्त जमीन से जंगली पौधों को हटाने के काम में कृषक पसंद करते हैं। यह जानवर बहुत कार्य-शक्ति और उच्च रोग प्रतिकार क्षमता के लिए विख्यात है।

KRISHNA VELLY

Krishna Valley is the draught breed of cattle, braving extreme hot, humid climatic conditions and is able to work well in the black cotton soil in the valleys of Krishna river in Karnataka state in India. It was reported that the kings of Southern Mahratta country, which lied in the watershed areas of the rivers (Krishna, Ghataprabha and Malaprabha), tried to evolve a powerful bullock for agricultural purposes in the sticky black cotton soil during the last two decades of the nineteenth century (Joshj and Phillips 1953). It was claimed that Gir and possibly Kankrej cattle from Gujarat state, Ongole cattle from Andhra Pradesh state and local cattle having Mysore-type blood were used to evolve the Krishna Valley breed. The king of Sangli, a well-known breeder of Krishna Valley, contributed substantially in making judicious use of all these strains to produce the desired type of animal. At present, only a few hundred animals of true to type are available in and around few villages of Jamkhandi, Mudhol and Athani taluks of northern parts of Karnataka. The reasons for the decline in number are selling of animals of Krishna Valley due to continuous drought in the tract and preference of the farmers for Khillari breed which is more attractive and massive in appearance resulted in lack of Krishna Valley Breeding bulls. The first step towards conservation of livestock genetic resources is the genetic characterization with respect to phenotypic parameters, unique qualities and utility. Subsequently finding out the genetic architecture through molecular means and evolutionary relationship with other related breeds would provide valuable information about the breed for taking up conservation measures. The physical characterization had already been done by Ramesha et al. (2001) in the native tract. Considering these facts, the present study has been carried out to characterize the Krishna Valley breed of cattle using the molecular marker, such as microsatellites.



कृष्णावेल्ली

इस नस्ल की उत्पत्ति में गिर, कांकरेज, ऑंगोल व मैसूर की स्थानीय नस्लों का प्रयोग किया गया है। यह नस्ल परिवहन के लिये उत्तम नस्ल है। तथा इसके साथ यह उच्च तापमान व आर्द्रता वाले क्षेत्रों में कुशलता के साथ कार्य करती है। इस नस्ल का उपयोग अत्यधिक चिपकने वाली काली मिट्टी में परिवहन के लिये सफलता पूर्वक होता रहा है, परन्तु इस समय कर्नाटक के उत्तरी क्षेत्र के जामखण्डी, मुथोल, एवं अठानी तालुकों में ही इसके कुछ सौ पशु शेष रह गये हैं। यह लम्बे व नोकदार सींगों वाली जिनका फैलाव बाहर की ओर, कान मध्यम एवं धरती की ओर अभिमुखी, कूबड़ पूर्ण विकसित, पिछला भाग अग्र भाग के अपेक्षा उठा हुआ होता है नाक का रंग भूरा व काला मुंह लम्बा, आँखें चेहरे की दिशा में व छोटी तथा माथा चपटा परन्तु ऊपर की ओर छोटा, गोलाई लिये हुये एवं उन्नत होता है। पूंछ लम्बी व सिर पर काले रंग की होती है। बाँक मध्यम व थनों का आकार छोटा व मध्यम तथा गोल होता है। खुर गोल छोटे तथा काले के रंग के होते हैं।

इस नस्ल की उत्पत्ति में गिर, कांकरेज, ऑंगोल व मैसूर की स्थानीय नस्लों का प्रयोग किया गया है। यह नस्ल परिवहन के लिये उत्तम नस्ल है। तथा इसके साथ यह उच्च तापमान व आर्द्रता वाले क्षेत्रों में कुशलता के साथ कार्य करती है। इस नस्ल का उपयोग अत्यधिक चिपकने वाली काली मिट्टी में परिवहन के लिये सफलता पूर्वक होता रहा है, परन्तु इस समय कर्नाटक के उत्तरी क्षेत्र के जामखण्डी, मुथोल, एवं अठानी तालुकों में ही इसके कुछ सौ पशु शेष रह गये हैं। यह लम्बे व नोकदार सींगों वाली जिनका फैलाव बाहर की ओर, कान मध्यम एवं धरती की ओर अभिमुखी, कूबड़ पूर्ण विकसित, पिछला भाग अग्र भाग के अपेक्षा उठा हुआ होता है नाक का रंग भूरा व काला मुंह लम्बा, आँखें चेहरे की दिशा में व छोटी तथा माथा चपटा परन्तु ऊपर की ओर छोटा, गोलाई लिये हुये एवं उन्नत होता है। पूंछ लम्बी व सिर पर काले रंग की होती है। बाँक मध्यम व थनों का आकार छोटा व मध्यम तथा गोल होता है। खुर गोल छोटे तथा काले के रंग के होते हैं।

LAL KANDHARI

Red Kandhari breed of cattle in purest form is found in Kandhar, Mukhed, Nanded and Biloli tehsils of Nanded district; some pockets of other districts like Ahmadpur; Parli and Hingoli tehsils of Latur district; and Bid and Parbhani districts of Marathwada region.

In Kandhar tehsil the Red Kandhari breed of cattle is more common. It is said that this breed was taken up by the royal dynasty of King Somadevraya as far back as 4th Century A.D. Raja Somdeorai was the son of Raja Kanhar and ruled over Kandhar. The name Red Kandhari appears to be the corrupt name from Raja Kanhar. This cattle breed having red colour also naturally acquires the name Red Kandhari. The breed could have been named by Raja Somdeorai in memory of his father as Red Kanhari, now misnomered as Red Kandhari. Red Kandhari breed supplies bullock power to northern part of Marathwada. In markets like Parbhani and Puna in Parbhani district, and Loha Kundalwadi and Naigaon in Nanded district facilities are available for sale and purchase of these animals. In the last two named markets, bulls and cows of pure breed are available for breeding purpose.

Red Kandhari is a medium-sized, strong and robust animal. The body is compact, squarely built, but not massive, with well-proportionate limbs. The colour is uniform deep dark-red, but

variations from a dull red to almost dark brown are found. Bulls are darker than cows. Fore-head is broad between eyes and is slightly bulging. Bullocks are used for heavy work. Average lactation yield is 597.6 ± 18.32 kg in a lactation period of 259.8 ± 4.26 days. Average fat content in milk is $4.57 \pm 0.03\%$ and SNF content $8.62 \pm 0.01\%$.

लालकंधारी

लाल कंधारी शुद्ध लाल कान्धारी प्रजाति के गौपशु नान्देड जिले के कन्धार, मुखेड, नान्देड एवं बिलोली तहसीलों में मिलते हैं। कुछ अन्य क्षेत्रों में भी इनका वंश पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अहमदपुर, परली, हिंगोली आदि तहसीलों, मराठवाड़ा के बीड़ एवं परभणी जिलों में भी यह प्रजाति मिलती

हैं। यह नस्ल चौथी शताब्दी ईसा पूर्व राजा सोमदेवराय के राज्य में राज्य पशु के रूप में रहती थी। इसके लाल रंग के कारण ही इसका नाम लाल कंधारी पड़ा है। यह मध्यम आकार की मजबूत कद-काठी वाली एवं रौबदार प्रजाति है। इसका शरीर मजबूत एवं लगभग वर्गाकार होता है। बैलों का रंग गायों के अपेक्षा गहरा होता है। माथा आँखों के बीच में बड़ा होता है एवं हल्का सा दबाव लिये होता है। इसके बैलों का मराठवाड़ा में भरपूर उपयोग भारी कामों के लिये किया जाता है। इसका औसतन दुध उत्पादन ५५० से ६०० किग्रा तथा दूध में वसा लगभग ४.६ % प्रतिशत होता है।



MALENADU GIDDA

This breed is found in Coastal hilly areas of Karnataka namely mangalore, Shimoga, Kumtha etc. This is small in size like vechura of Kerale and highly suitable and versatile for hilly areas. Mainly suitable for agriculture highly disease resistant, less diet and nutritious milk is speciality of this breed. Normally they are found in brownish black slight yellowish and white colour. Their forehead long and narrow, small horns and long tail normally milk yield is 1-2 liters per day.



मालेनाडु गिड्डु

यह कर्नाटक के तटीय पर्वतीय क्षेत्र मंगलूर, शिमोगा, कुमठा में पाई जानी वाली छोटी नस्ल है। केरल की वेच्युर जैसी छोटे आकारवाली पर्वतीय इलाको के लिए आदर्श नस्ल है। मुख्यतः कृषि में उपयोगी। इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है आहार की मात्रा भी कम होती है, पौष्टिक दूध प्रदान करती है। सामान्यतः इसका रंग भूरा, काला, हल्का पीला एवं सफेद पाया जाता है। सिर लंबा और पतला होता है। सींग छोटे होते हैं पूँछ लंबी होती है। दूध प्रतिदिन १ से २ लिटर देती है।

MALNAD GIDDA

Malnad Gidda Cattle: Malnad Gidda is a small, multipurpose breed of cattle reared by the farmers in western ghat region of Karnataka. They play a pivotal role in the socio-economic status of the farmers in this region. A survey was carried out in Shimoga district during 2005 for studying the breed. It was observed that Malnad Gidda cattle are generally maintained under semi range housing system. During the day they are allowed to graze in the forest areas and at night, they are kept inside the shed. The shed is made up of brick or stone wall, floor with stones and roof is generally with tiles. The farmers generally utilize this breed for manure, milk and draft purposes. Bedding material containing paddy straw, dry leaves and twigs mixed up with dung and urine becomes an ideal compost fertilizer for coffee and arecanut plantation. The milk produced by this breed is 0.5 - 2.5 liters per day. The disease resistance capability of this indigenous breed is considered to be very important in the present context of characterization, utilization and improvement of the breed.



मलनाड गिड्डा

मलनाड गिड्डा यह एक छोटी, विविध काम में आनेवाली कर्नाटक के पश्चिमी घाटपर कृषकों के पास पलती है। इस भाग के कृषकों का सामाजिक, आर्थिक जीवनमान तय करने में ये नस्ल बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 2005 में इन नस्लों के विषय में अध्ययन करने के लिए शिमोगा जिले में एक सर्वेक्षण किया। मलनाड गिड्डा ये नस्ल सामान्यरूप से

मध्य वर्गीय घरों में पली जा सकती हैं। दिन के समय में जंगल में चरने के लिए छोड़ देते हैं और रात में सायबान में बांधकर रखते हैं। यह शेड (सायबान) ईंटे अथवा पत्थर से दिवार, जमीन पत्थरों से और छत कवेलुसे तैयार किया जाता है। कृषक सामान्यतः इस नस्ल को खाद, दूध और शक्ति-कर्म के लिए इस्तेमाल करते हैं। मूलभूत घटकों में मोटी घास की पर्त, सूखे पत्तों का समावेश गोबर और गोमूत्र मिश्रण, छोटी टहनियों कॉफी और arecanut पौधों के लिए अच्छा उर्वरक, खाद के रूप में उपयोग में लाते हैं। ये नस्ले प्रतिदिन 0.5 से 2.5 लिटर दूध देती हैं। वर्तमान में वैशिष्ट्यपूर्ण रचना, कामों में उपयोग में लाना, और नस्ल की सुधारित आवृत्ति इन संदर्भ में ये नस्ल रोग प्रतिकारक क्षमता में भारतीय नस्लों में महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं।

MALVI

Malvi is primarily a draught breed found in a large area comprising Indore, Dewas, Ujjain, Shajapur, Mandasaur, Ratlam, and Rajgarh districts of Madhya Pradesh, and Jhalawar district of Rajasthan. There are 3 strains of Malvi breed: light, medium and heavy. The Umatware strain bred in Rajgarh and Narsingarh is a heavy type animal; the Saugar strain in the Malwa tract of Madhya Pradesh is a lighter type. In the west adjoining Rajasthan the breed is larger, while in Madhya Pradesh it is smaller. Malvi bullocks are well known for quick transportation, endurance and ability to carry heavy loads on rough roads.

Malvi cattle are grey in males, with neck, shoulders, hump and quarters almost black. Cows are bullocks become nearly pure white with age. Malvi cattle have short, deep and compact body. Legs are short but powerful, and hooves are strong and black. Dewlap is well developed and the sheath is pendulous. Head is short and broad with dished forehead. Muzzle is dark and slightly upturned. Horns are strong and pointed, and emerge from the outer angles of poll in an outward and upward direction. Average milk yield is 1,074 kg (range 627 to 1,227 kg). Average lactation length is 306 days (range 411 and 530 days).

मालवी

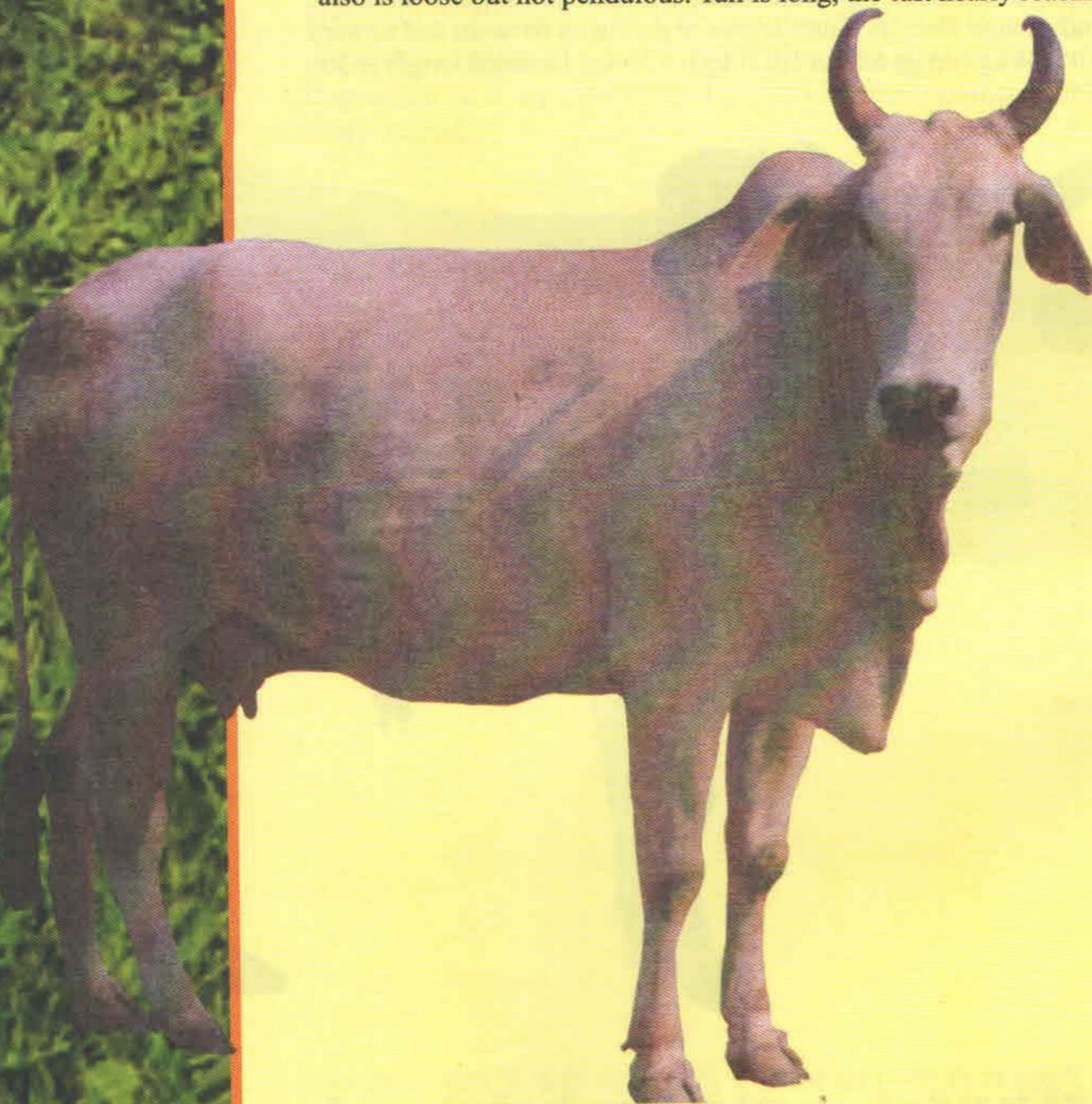
मालवी प्रजाति के बैलों को तीव्र परिवहन के साधन के रूप में जाना जाता है। ये अधिक भारवाही एवं लम्बे समय तक कार्य करने की क्षमता रखते हैं। राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में मिलने वाली इसकी प्रजाति हल्की होती है, जबकि मध्य प्रदेश में मिलने वाली मालवी नस्ल छोटे आकार की होती है। नर पशुओं में त्वचा का रंग सलेटी होता है। इनकी गर्दन, कन्धे, कूबड़ व शरीर का लगभग एक चौथाई भाग काले रंग का होता है। आयु बढ़ने के साथ साथ रंग सफेद होता जाता है। शरीर छोटा, गहराबदार एवं संतुलित होता है। पैर छोटे परन्तु मजबूत होते हैं। खुर अत्यधिक मजबूत एवं काले रंग के होते हैं। गले की झालर पूर्ण विकसित एवं त्वचा भारी व लटकती हुई होती है। सिर छोटा होता है। जबकि माथा तशतरी की तरह चौड़ा व सपाट होता है। थूथन गहरे रंग का व थोड़ा सा ऊपर को उठा हुआ प्रतीत होता है। सींग नुकीले एवं मजबूत होते हैं, जोकि सिर के किनारों से बाहर की ओर निकलते हुये ऊपर की ओर निकले होते हैं। इसका औसत दुध उत्पादन लगभग 9000-9900 कि.ग्रा. होता है।



MEWATI

Mewati breed of cattle is found in the tract known as Mewat, comprising Alwar and Bharatpur districts of Rajasthan. These cattle are also found around Mathura and Kosi in western Uttar Pradesh, and Faridabad and Gurgaon districts of Haryana. The breed is sometimes spoken of as Kosi, on account of the sale of large number of cattle of this breed at the Kosi market. Presently this market has become buffalo dominated and few cows are being brought for sale. Mewati cattle are similar in type to the Haryana but there are traces of influence of the Gir, Kankrej and Malvi breeds. Mewati cattle are usually white with neck, shoulders and quarters of a darker shade. Face is long and narrow with forehead slightly bulging. Horns emerge from the outer angles of poll and are inclined to turn backward at the points. Eyes are prominent and surrounded by a very dark rim. Muzzle is wide and square. Upper lip is thick and overhanging, giving the upper part of the nose a contracted appearance. Ears are pendulous but not so long. Dewlap, though hanging, is not very loose. Sheath also is loose but not pendulous. Tail is long, the tuft nearly reaching the heels. Cows usually have

well-developed udders. Mewati cattle are powerful and docile, and are useful for heavy ploughing and carting.



मेवाती

मेवाती नस्ल मेवात क्षेत्र में पायी जाती है। ये पशु राजस्थान के भरतपुर जिले, पश्चिम उत्तर प्रदेश के मथुरा और हरियाणा के फरीदाबाद और गुड़गाँव जिलों में पाये जाते हैं। इस प्रजाति को 'कोसी' के नाम से भी जानते हैं। मेवाती नस्ल लगभग हरियाणा नस्ल के समान ही होती है। मेवाती पशु की गर्दन सामान्यतः सफेद, कंधे से लेकर लगभग 9/8 भाग गहरे रंग का होता है। इनका चेहरा लम्बा व पतला होता है। आँखें उभरी और काले रंग के घेरे से घिरी हुई होती है। इसका थूथन चौड़ा और नुकीला होता है। ऊपरी होंठ मोटा और लटका और नाक का ऊपरी भाग सिकुड़ा प्रतीत होता है। कान लटका हुआ लेकिन लम्बा नहीं होता है। गले के नीचे लटकी हुई झालर ज्यादा ढीली नहीं होती है। शरीर की खाल ढीली

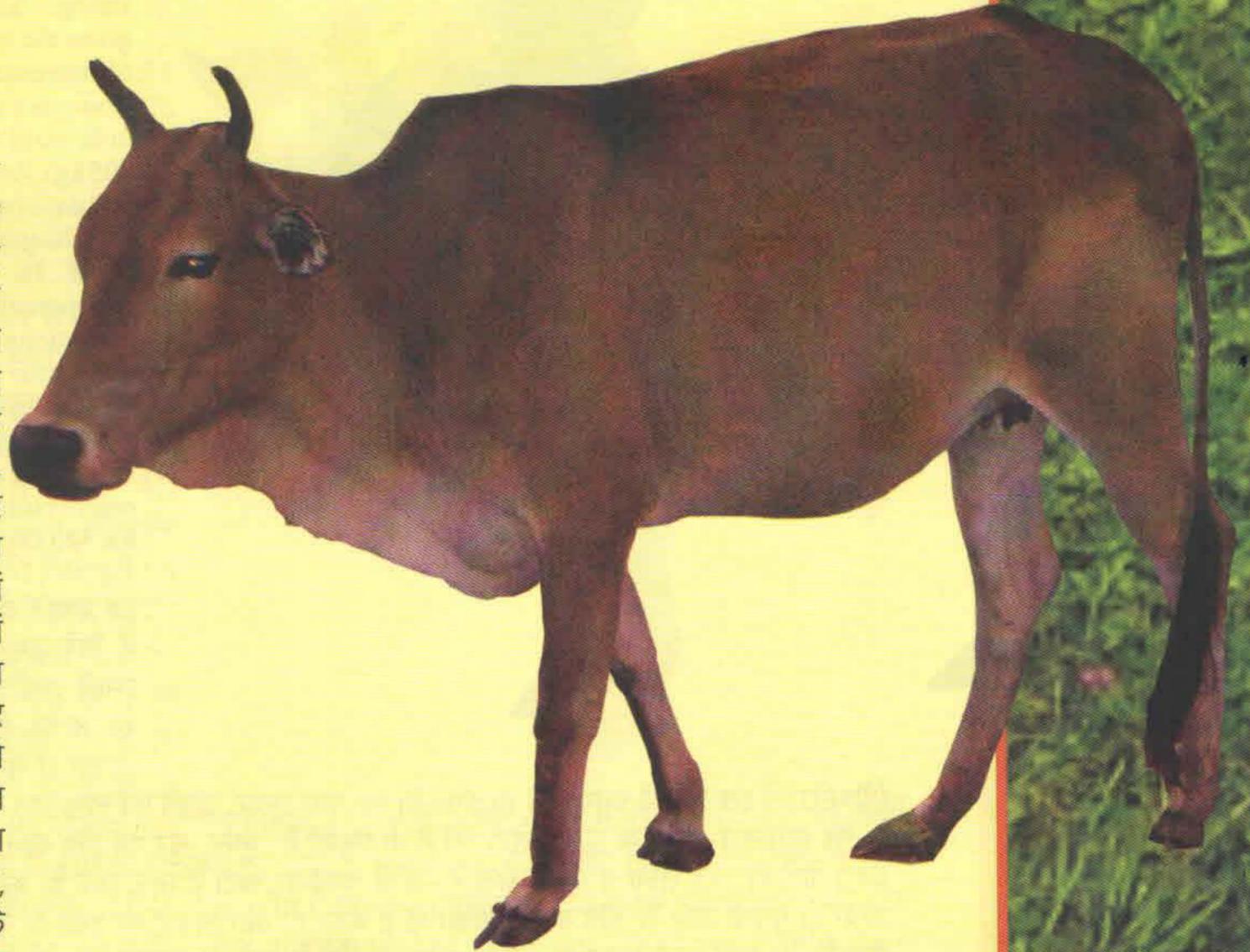
लेकिन लटकी हुई नहीं होती है। पूंछ लम्बी, सख्त तथा लगभग ऐड़ी तक होती है। गाय के थन पूर्ण विकसित होते हैं। मेवाती बैल शक्तिशाली और खेती में जोतने एवं परिवहन के लिये उपयोगी होते हैं।

MOTOO

The Motu cattle are mainly Southern part of Malkangiri district and adjoining area of Chattisgarh and Andhra Pradesh. Heavy concentration is in Motu, Kalimela, Podia and Malkangiri area of Malkangiri district in Orissa. This animal is reared for milk and graceful purpose. Goat calve of this animal is mainly Brown (Reddish) sometimes Grey. Also some animals are found in white colour. Horns are found in Black colour mainly straight, upward with round off up. This is a medium sized animal. The udder shape in females is found in Bowl shape. Body weight of male animal in adult is 172 kg and in females average 137 kg. Milk yield is average 0.62 liter to 0.75 liter per day. Draught & Heat tolerance is excellent in this animal.

मोटू

मोटू प्रजाति :-
छत्तिसगढ़ और
आंध्र प्रदेश का
संघिस्थान प्रदेश और
मुख्य मलकांगिरी
जिले का दक्षिण प्रदेश
में ये मोटू प्रजाति
मिलती हैं। ओरिसा के
मोटू, कालीमेला,
पोडिया और
मालकांगिरी जिले का
मालकांगिरी प्रदेश में
यह प्रचुर मात्रा में
मिलती हैं। ये प्रजाति
मुख्यरूप से दूध और
सद्भावना की दृष्टिसे
रखी जाती हैं। इस
प्रजाति के खाल का
रंग तपकिरी भूरा,
कभी कभी राख के
रंग में रहता है। कुछ
प्रजाति सफेद रंग की
मिलती हैं। सींगे काले रंग की प्रमुख रूप से सीधी, ऊपर जानेवाली और अंतमें वक्र रहती हैं। यह मध्यम आकार की प्रजाति हैं। गायों के थन बड़े कटोरे के आकार की रहती हैं। नर प्रजाति का वजन 172 कि.ग्र. रहता है और गायों औसतन 137 कि.ग्र. की रहती हैं। ये प्रतिदिन 0.62 लिटर से 0.75 लिटर तक दूध देती हैं। अकाल और अति उष्णता सहन करने की ताकद इस प्रजाति में प्रचुर मात्रा में पाई गई है।



NAGORI

Nagori is a reputed breed. It is primarily reared for draught quality of its bullocks. Its home tract lies in the Nagaur district of Rajasthan in Western India. A sizable population of the breed is also found in the adjoining Jodhpur district and Nokha tehsil of Bikaner district. The traditional breeding tract covers an area of 17,718 km. Nagori animals are fine, upstanding, very alert and agile, and generally white or light grey. In some cases head, face and shoulder are slightly grayish. Eyelids are white or light grey. Muzzle, hooves and horns are black. Skin is tight and black. Forehead is flat and not so prominent. Face is long and narrow like that of horse. Eyelids are heavy and overhanging, whereas eyes are small, clear and bright. Ears are medium in size with pinkish inside. Poll is very small and is almost absent in animals true to the breed. Horns are of medium size emerging from the outer angles of poll. They extend in an outward direction and are carried upwards with a gentle curve to turn in at points. Shoulder blade is prominent. Hump is well developed; back straight; legs long and straight with small, strong and compact hooves. Dewlap is small, fine and buttoned up with the body. Navel sheath is very small, tucked up with the abdomen like a button. Tail is high set and is of moderate length (below hock) ending in a black switch.

Cows have small and shallow udder. Bullocks are big and powerful. They are capable of heavy

draught work in deep sands. There is a tendency to legginess and lightness of bone, though feet are strong. This characteristic has given the breed its agility and ease of movement. It runs like a horse. Cows are poor milkers. Average milk yield is 603 kg (range 479 to 905 kg). Average lactation period is 267 days (range 237 to 299 days). The Nagori is mainly a draught breed. Its bullocks are used for transportation and in agricultural operations such as ploughing, cultivation and drawing water from well. They are usually broken for light work at about 3 years of age when they weigh around 275 kg. A pair of bullocks cost approximately Rs. 15,000.

नागौरी

यह प्रजाति खेती एवं परिवहन दोनों कार्यों के लिये समान रूप से उपयोगी होती है। इसकी उत्पत्ति एवं प्रवास स्थल राजस्थान का नागौर जिला है। इसके अतिरिक्त जोधपुर से सटे भागों में एवं नोखा तहसील

(बीकानेर) में इस नस्ल के पशुधन की बहुतायत है। यह नस्ल सुन्दर, उन्नत एवं स्वभावगत चौकन्ना, स्फूर्तिली रहने वाली है। यह सामान्यतः सफेद या हल्के सलेटी रंगों में ही मिलती है। शूथन, खुर एवं सींग काले रंग के होते हैं। माथा चपटा, चेहरा घोड़े की तरह लम्बा व संकरा होता है। आँखें चमकदार छोटी व साफ होती हैं। कानों का आकार मध्यम व रंग अन्दर से गुलाबी होता है। सींग मध्यम आकार के व बाहर की ओर निकले हुये रहते हैं। कूबड़ पूर्ण विकसित एवं सीधा होता है। पैर लम्बे व सीधे तथा खुर छोटे एवं मजबूत होते हैं। गले की झालर छोटी, देखने में सुन्दर एवं शरीर के साथ चिपकी रहती है। पूंछ एड़ी तक पहुँचती है तथा इसका सिरा काले रंग का होता है। बाँक छोटा व फूला हुआ होता है। बैलों का आकार बड़ा होता है व क्षमता अत्यधिक होती है। ये गहरे रेतिले भू भाग पर भी कार्य करने में कुशल होते हैं तथा घोड़े की तरह दौड़ने में सक्षम होते हैं। गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता औसतन ६०० किग्रा प्रति ब्यांत होती है। ये औसतन २६७ दिनों के समय अन्तराल तक दुग्ध उत्पादन करते हैं।

नागौरी यह मुख्यरूप से भारवाही नस्ल है। इसके बैल परिवहन और कृषि संबंधी काम के लिये, जैसे हल जोतना, खेती और कुएँ से पानी निकालने के काम आते हैं। ये आम तौर पर ३ साल के उम्र से ही काम शीघ्रता से करते हैं। इनका वजन २६५ कि.ग्रा. होता है। बैल के जोड़ी की किमत लगभग १५००० रु. होती है।



NIMARI

Nimari breed is found in Nimar tract of Narmada valley in Madhya Pradesh comprising Khandwa, Khargon and Barwani districts. Some animals are also found in Jalgaon district of Maharashtra. Animals are active. Bullocks are known for their draught work but cows are poor milkers. The Nimari breed seems to have originated from crossing of the Gir and the Khillari. Gir blood has contributed to its coat colour, massive body structure and convexity of forehead, and Khillari blood to its hardiness, agility and temper. Khamla found in Satpura ranges of Madhya Pradesh and Khamgoan in Berar are very similar to Nimari and may be its strains

Nimari cattle are red with large splashes of white on various parts of the body. Head is moderately long with a somewhat bulging forehead. It is carried alertly and gives the animal a graceful appearance. Horns usually emerge in a backward direction from the outer angles of the poll, somewhat in the same manner as in Gir cattle, turning upward and outward and finally backward at the points. Occasionally, horns are also like those of Khillaris in size and shape, copper coloured and pointed. Ears are moderately long and wide, but are not pendulous. Muzzle in many animals is either copper or amber-coloured. Dewlap and sheath are moderately developed, though the sheath has the tendency to be pendulous. Hump in bulls is well developed and sometimes hangs over. Tail is long and thin with the black switch reaching to the ground. Hooves are strong and can stand rough wear on stony ground. Skin is fine and slightly loose. Cows usually have well-developed udder. Average milk yield is about 360 kg (range 310 to 495 kg).

Average lactation length is 237 days (range 220 and 260 days). Milk fat is around 4.9%.

निमाडी

निमाडी यह प्रजाति मुख्य रूप से मध्यप्रदेश की नर्मदा नदी की निमार घाटी में खाण्डवा, खरगौन, एवं बडवानी जिलों में पायी जाती है। इस प्रजाति का कुछ पशुधन महाराष्ट्र के जलगांव जिले में भी पाया जाता है। इस प्रजाति के बैल अत्यधिक उपयोगी होते हैं। यह प्रजाति खिल्लारी एवं गीर नस्लों के संकरीकरण से प्राप्त हुई है। इसकी त्वचा का रंग गीर प्रजाति के समान तथा शरीर की बनावट व माथे का उन्नत रूप गीर नस्ल से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त खिल्लारी नस्ल के प्रभाव से

इसमें कठोरता, शालीनता एवं स्वभाव में उष्णता मिलती है। निमाडी प्रजाति लाल रंग परन्तु सफेद बड़े-बड़े धब्बों वाली त्वचा के साथ मिलती है। सिर थोड़ा लम्बा एवं माथा थोड़ा साफल्य हुआ प्रतीत होता है। यह चौकन्ना रहने वाली प्रजाति प्रतीत होती है। सींग दोनों सिरों की ओर से निकलकर वक्राकार ऊपर उठते हुये तथा पीछे की ओर को मुड़े रहते हैं। सींगों का अग्र भाग नुकीला होता है। इसके सींगों की आकृति कुछ-कुछ गीर नस्ल से मिलती है। सींगों का रंग तौंबई या अम्बर होता है। गले के नीचे झालर लटकती प्रतीत होती है। साँड़ों में कूबड़ बड़ा, पूर्ण विकसित एवं लटकता हुआ प्रतीत होता है। पूंछ लम्बी, पतली व धरती छूती हुई रहती है, जबकि इसका सिरा काले रंग का होता है। खुर काले रंग के परन्तु बहुत मजबूत एवं पथरीली भूमि के उपयुक्त होते हैं। त्वचा सुन्दर परन्तु ढीली होती है। बाँक पूर्ण विकसित होता है। गायों का दुध उत्पादन प्रति ब्यांत लगभग ३६० किग्रा होता है।



ONGOLE

Ongole is the dual-purpose breeds from southern part of India. Ongole breed contributed to the development of some of the exotic breeds like 'American Brahman', 'Santa Getrudis' etc. and is used extensively for beef purpose in Latin American countries. It is also called the Nellore breed since the Ongole taluka was earlier included in Nellore district but now it is included in Guntur district. Ongole have a glossy white coat called padakateeru by the breeders. Ongole are large and heavy with loosely knit frame, great muscularity and long limbs. They have majestic gait. Forehead is broad between eyes and slightly prominent. Face moderately long and coffin shaped. Hump in males are well developed and erect filled up on both side and not concave or leaning to either side. Dewlap is large fan shaped, fleshy and slightly pendulous. Farmers identify the Ongole breed with 3 lengths (legs, shoulder and back), 7 shorts (muzzle, ear, neck, dewlap, flank, sheath and tail) and 9 blacks (muzzle, eyes, tip of ear, knees, fetlocks, sheath, switch of tail, anal region and tip of testes). Average milk yield is 688 kg (range 475 to 1,000 kg) in a lactation period of about 230 days (range 160 to 270 days). Average fat is 4.2% (range 4.1 to 4.8%).



ओंगोल

ओंगोल दक्षिण भारत की एक प्रमुख द्विउद्देशीय प्रजाति है। यह नैल्लोर जिले में विकसित प्रजाति है इसलिये इसका नाम नैल्लोर भी है। इसकी त्वचा का रंग चमकदार सफेद होता है। यह बड़ी एवं मजबूत प्रजाति है। इसकी मांसपेशियाँ पूर्ण विकसित होती है। माथा चपटा व चौड़ा व आँखों के मध्य थोड़ा सा उन्नत होता है। चेहरा थोड़ा सा लम्बा, ताबूत की आकृति का होता है। इस प्रजाति में कूबड़ पूर्ण विकसित एवं दोनों तरफ से उभरा एवं भरा हुआ होता है। गले के नीचे की झालर पंखे की तरह एवं लटकती हुई प्रतीत होती है।

इस प्रजाति से प्रति ब्यांत दुग्ध उत्पादन औसतन ७०० किग्रा रहता है। इसमें वसा लगभग ४.२ % तक होता है। इसे अमेरिकी नस्लों को विकसित करने में प्रयोग किया जा रहा है।

PONWAR

The Pilibhit district of Uttar Pradesh is the breeding tract of Ponwar cattle. The main area is the Purnapur Block in the Pilibhit district comprising Mainakot, Mazara, Bhirkhera, Faizulaganj and Rajpur Semra villages. A few animals of this breed are also found in Lakhimpur-Kheri district of Uttar Pradesh. This breed is also known as Kabri (mixture of colours) in the breeding tract. The Ponwar seems to be small hill type breed. Critical examination of the animals reveals that this breed may be a mixture of hill and plain cattle. The landless labourers and marginal farmers mainly keep these animals.

The progressive farmer keeps no animal of this breed. Purebred animals are available in the interior area of the breeding tract. The

Tharu tribe is mainly involved in rearing pure Ponwar animals. Some animals have also been maintained by Pasi and Yadav communities. Coat color of these animals is brown or black with white patches in varying proportions. The colour of the muzzle, eyelids and hoofs is generally black. The tail switch is white in black animals and black in those having a greater proportion of white patches. The horns are small to medium and curve inward with pointed tips. The ears are small and erect with a sideways orientation and have pointed tips. The face is small and narrow with a slightly concave forehead, which is narrow and has a white marking. The body is small, compact and non-fleshy. The skin is tight, the dewlap is medium and the hump is small in females and developed in males. The tail is long and reaches to below the hock.

Cows have small udders and teats and milk veins are small. The animals of this breed are aggressive. Cows produced little milk about 0.5 to 2.5 kg per day for 8 to 10 (average 8.9 ± 0.1) months. Lactation milk yield averaged 462.5 ± 12.1 kg. Age at first calving ranged from 40 to 60 months (average 52.2 ± 0.5) and the inter-calving period averaged 12.6 ± 0.1 months. The service period in Ponwar cattle varied from 60 to 100 (average 76.0 ± 1.1) days. The approximate Ponwar population in the entire breeding tract was estimated as 10667 based on the figure available for total cattle population in Purnapur block (49800).

पौवार

पौवार यह प्रजाति मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले में पायी जाती है। इसका विस्तार क्षेत्र पूरनपुर, नैनाकोट, माजरा, मीरखोड़ा, फैजलगंज एवं राजपुर सेमरा गाँवों तक है। इसके कुछ पशु लखीमपुर खीरी जिले में भी मिलते हैं। यह कबरी के नाम से भी जानी जाती है। यह छोटी पहाड़ी प्रजाति की तरह की प्रजाति है। यह पहाड़ी एवं देशी

प्रजातियों के संकरीकरण का परिणाम है। इस प्रजाति को अधिकतर भूमिहीन एवं सीमान्त किसान पालते हैं। यह नस्ल शुद्ध रूप में थारु जनजातियों के पास मिलती है। इसकी त्वचा का रंग भूरा या काला तथा सफेद धब्बेदार होता है। थूथन, आँख व खुरों का रंग सामान्यतया काला ही होता है। पूंछ के सिरे का रंग काले पशुओं में सफेद एवं सफेद रंग के पशुओं में काला होता है। सींगों की आकृति अन्दर की ओर गोलाई लिये होती है। कान छोटे एवं आगे से नुकीले होते हैं। चेहरा छोटा होता है, लेकिन माथा थोड़ा सा अवतलाकार एवं संकरा होता है। इस पर भी सफेद धब्बे रहते हैं। शरीर छोटा, त्वचा कसी हुई तथा कूबड़ छोटा होता है। गले के नीचे झालर मध्यम आकार की होती है। बाँक व थनों का आकार भी छोटा होता है। ये अत्यधिक उत्तेजना से परिपूर्ण नस्ल है। यह प्रतिदिन ०.५ से २.५ लीटर अथवा प्रति ब्यांत लगभग ४५० से ५०० किग्रा दूध देती है। सेवा काल लगभग ६० से १०० दिन का रहता है। इस नस्ल के कुल पशुओं की संख्या लगभग १०००० है।



PULIKULAM

Pulikulam cattle are maintained in large migratory herds in Madurai and nearby region of Tamilnadu. Utility is draught and manure. These cattle are used in games like bull riding (Jallikattu) in local area. Breed is more resistance to communicable and parasitic diseases as compared to crossbreds under hot and wet conditions. Pulikulam is a village located in Sivaganga which was part of the erstwhile composite Ramanathapuram district, local myth says that the village got its name Puli Kulam (Tiger Pond) because the village some five hundred years ago was surrounded by thick forest consisting Karuvelam (Acacia Nilotica) trees and tigers used to come and quench their thirst in the pond. The bulls here in the village are believed to be so raging that they would fight the tigers before going down. SEVA founder, P.Vivekanandan, while talking to The Hindu on Monday, said that the indigenous breed which is found in 8 villages in Sivaganga and 13 villages in Madurai were originally brought by the pastoralists who migrated from Pulikulam over the years. "Ninety nine per cent of the cattle is bred and maintained by the traditional cowherds belonging to Yadava caste and remaining one per cent is maintained by members of Mukkulathor caste." Starting from the month of October, till the harvest season in January the cattle would be kept in herds in their villages and during the remaining season they would be on the move going to hills and forest areas, however restrictions by forest department on access to grazing land has resulted in decrease of their numbers. Pulikulam cattle was widely used for ploughing but mechanization saw farmers no more using them, they are widely used for cattle penning wherein cattle are kept overnight in the field and urine and fecal matter added to the soil is incorporated to a shallow depth by working blade harrow or cultivator or cultivator. Globalisation has led to a situation where the traditional role of pastoralists as custodians of animal genetic resources is on the wane. These indigenous breeds, which were maintained after a meticulous process of selection and breeding, could withstand local environment conditions. They are disease-resistant and culturally and religiously are part of our social.

पुलिकुलम

पुलिकुलम नस्लें :- मदुराई और उसके आसपास का तमिलनाडु के प्रदेश में स्थानांतरण ने झुंड के रूप में पुलिकुलम नस्ल को कायम रखा है। उपयोगिता है शक्तिकर्म और खाद। स्थानिक प्रदेश में ये नस्लों का साँड-सवारी जैसे खेलों में उपयोग करते हैं। (जल्ली कट्टू)। संकरित नस्लों की तुलना में यह प्रजाति संक्रमणजन्य व्याधियों और परजीवी उत्पन्न व्याधियों के विरुद्ध, गरम और ठंडे वातावरण में भी लड़ने की ज्यादा क्षमता रखती है। पुलिकुलम यह एक शिवगंगा स्थित ग्राम (देहात) है जो पूर्व से रामनाथपुरम जिले से संबंधित एक प्रदेश है। एक स्थानिक मिथक के अनुसार पाँचसौ वर्ष के पहले यह गाँव कुरुवेलम (Acacia Nilotica) वृक्षों से युक्त घने जंगल से व्याप्त था। बाघ यहाँ आते थे और इस तालाब के पानी से अपनी तृषा मिटाते थे, इसलिए इसे पुलिकुलम (बाघों का तालाब) ऐसा नामाभिधान प्राप्त हुआ। यहाँ के साँड इतने बलवान थे की तालाब में नीचे जानेवाले बाघों को उनके साथ लड़ना पड़ता था। SEVA केंद्र के संस्थापक श्री. पी विवेकानंदन ने 'द हिंदू' से वार्तालाप करते हुए कहा कि शिवगंगा के 8 गाँवों में और मदुराई के 13 गाँवों में जो भारतीय नस्लें पायी जाती हैं, वे बहुत वर्ष पहले ग्वाल-किसानों जो पुलिकुलम से स्थानांतरित हुए उन्होंने लाए थे। "निन्त्यानवे प्रतिशत गाय-बैलों का दाना-पानी और उनका निर्वाह यादव कुल करते हैं जिनके पास परंपरागत रूप से आई हुई इन जानवरों की झुंड रहती है। बाकी का एक प्रतिशत जानवरों का निर्वाह मुक्कुलादर जाति के कुटुंबीय करते हैं।" ऑक्टोबर महिने के आरंभ से फसल काटने के मौसम तक अर्थात् जनवरी तक ये गायबैलों की झुंड गाँवों में रखते हैं। बाकी के मौसम में ये जानवर पहाडी इलाके में और जंगल प्रदेश में चरने के लिए छोड़ देते हैं। जंगल विभाग ने



उनके चरने की जगह पर निर्बंध डालने से उनकी संख्या कम हुई है। पुलिकुलम बैल ज्यादातर हल को लगाने के काम में उपयोग में लाते थे। किंतु यांत्रिकीकरण से अभी कृषक इनका उपयोग नहीं करते। (Cattle penning) खेल में इनका ज्यादातर उपयोग किया जाता है। कई गाय-बैलों को रातभर कृषक जमीन पर रखा जाता है जहाँ उनके गोबर और मूत्र व मिट्टी मिलाकर छिछले गर्त में एक साथ मिलाया जाता है और पेड़-पौधों को बढ़ाने के लिये दिया जाता है। जागतिकरण प्रक्रिया से इन पारंपरिक ग्वाले - किसानों के पास रहनेवाले इस प्रजाति के वंशपरंपरा बढ़ाने की संख्या चिंतित करनेलायक मात्रा में बहुत कम हुई है। बहुत सूक्ष्म अध्ययन कर चुनाव करके और पशुओं की नस्ल बचाए रखने के लिए पैदास कर इस भारतीय नस्ल को बनाये रखा है। स्थानिक वातावरण परिस्थितियाँ सहन कर सकती हैं। ये नस्ले रोग प्रतिकारक शक्ति से युक्त हैं और हमारे समाज का सांस्कृतिक और धार्मिक हिस्सा हैं।

PUNGANUR

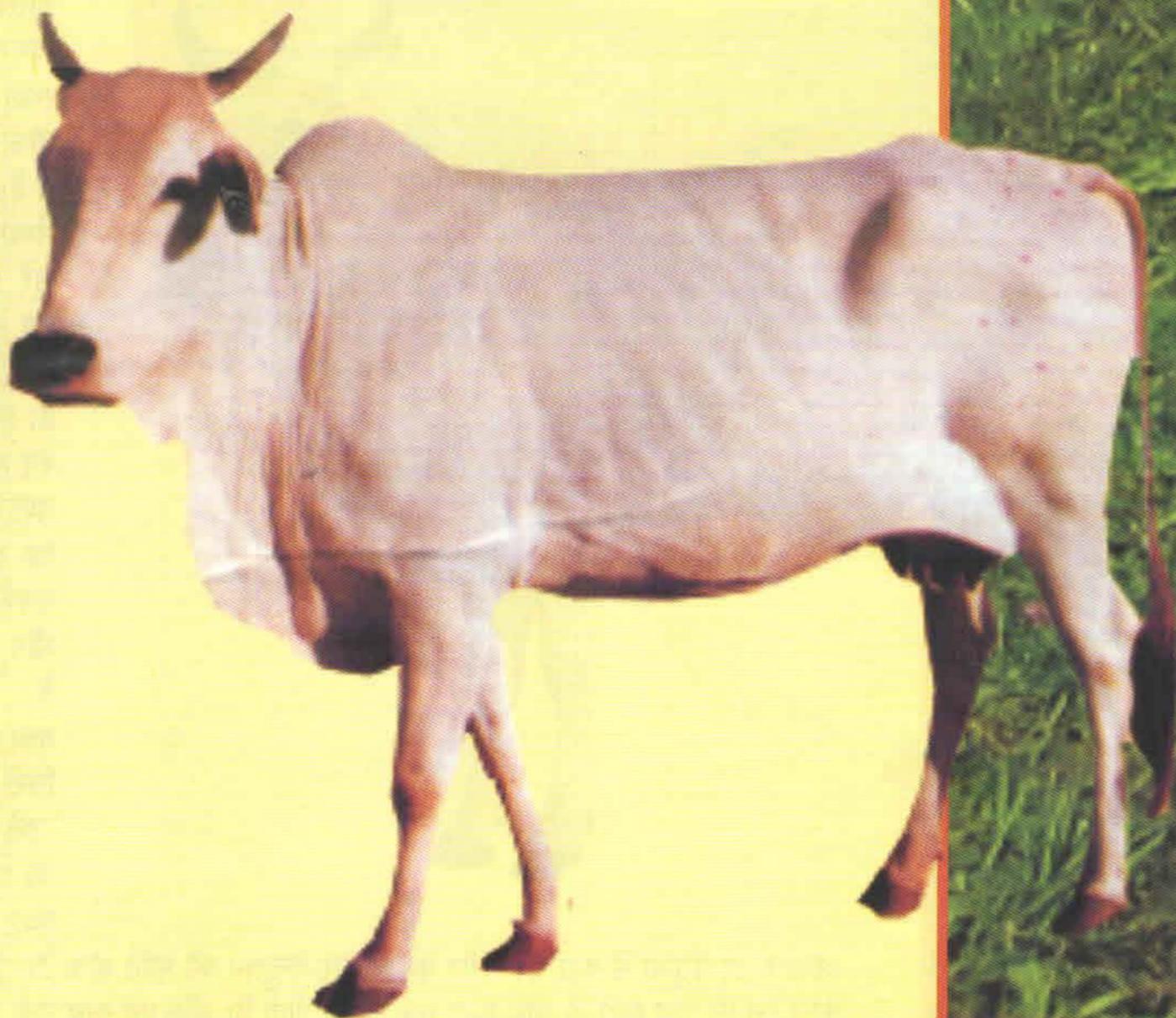
Punganur breed is short-statured cattle found in Chittoor district of Andhra Pradesh. Its home tract is Punganur town of Chittoor district. This breed was developed by Rajahs of Punganur. Hence this breed is known as 'Punganur'. These are reared for milk. There are a very few animals left in the breeding tract. This breed is almost on the verge of extinction. These animals were used for agricultural operations on light soils. Punganur cattle are white, grey or light brown to dark brown. White mixed with red or black colour animals are also available. Combination of white with brown or black patches is not uncommon. Skin, muzzle, eyelids and hooves are black. Animals of this breed are compact with comparatively tighter skin, extensive hanging dewlap, short legs, and long body with well sprung ribs. Forehead is concave and broad. Horns are black, small and crescent shaped, and often loose curving backward and forward in males and lateral and forward in females. Horns are stumpy in males and slightly longer in females. Horn length ranges from 10 to 15 cm. Forehead is broad and prominent. Hump is of small size in females and medium but inclined to be drooping in males. Bulls are more docile than females.

Lactation milk yield is 546.0 ± 30.6 litres (range 194 to 1,099 litres), lactation length 263.4 ± 16.5 days (range 98 to 445 days), and calving interval 452.4 ± 18.7 (range 317 to 832 days). On an average milk of Punganur cows contains 5% fat (range 3.11 to 10.0%) and 9.5% SNF (range 7.69 to 10.56%).

पुंगानूर

यह आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में मुख्यरूप से पायी जाने वाली प्रजाति है। यह एक छोटी प्रजाति है। इसका उत्पत्ति स्थल भी चित्तूर जिले का पुंगानूर नामक स्थान है। इसी के नाम पर इसका नाम पुंगानूर पड़ा है।

यह प्रजाति समाप्ति के कगार पर है। यह हल्की भूमि पर कृषि कार्यों में उपयोगी है, परन्तु दूध उत्पादन में पीछे है। ये सामान्यतयः सफेद के साथ लाल, काले, हल्के भूरे एवं गहरे भूरे रंगों के मिश्रण में मिलती है। इस प्रजाति के पशु कसी हुई त्वचा वाले, गले के नीचे की झालर लटकती हुई, पैर छोटे, व शरीर छल्लेदार लम्बा होता है। माथा बड़ा व अवतलाकार होता है। सींग काले, छोटे व अर्द्धचन्द्राकार होते हैं। नर पशुओं में ये आगे की ओर झुके होते हैं। सींगों की लम्बाई 90-95 सेमी. तक होती है। माथा बड़ा व उन्नत होता है। मादा पशुओं में कूबड छोटा जबकि बैलों में



बड़ा या मध्यम आकार का लेकिन झुकाव लिये होता है। गायों की आपेक्षा बैल अधिक आकर्षक होते हैं। प्रति ब्यांत दूध उत्पादन लगभग ५५० लीटर तक होता है। इसके दूध में औसतन ५ % वसा मिलती है।

RATHI

The Rathi is an important milch breed of cattle found in the western part of Rajasthan. It takes its name from a pastoral tribe called Raths who are Muslims of Rajput extraction and lead a nomadic life. The home tract lies in the heart of Thar desert and includes Bikaner, Ganganagar and Jaisalmer districts of Rajasthan. These animals are particularly concentrated in the Loonkaransar tehsil of Bikaner district which is also known as 'Rathi Tract'.

Rathi is a medium sized breed with symmetrical body. The animal is usually brown with white patches all over the body, but animals having completely brown or black coats with white patches are often encountered. The lower body parts are generally lighter in colour as compared to the rest of the body. Face is broad between eyes and slightly dished. Muzzle and hooves are black. Eyelids are brown or black in colour. Horns are short to medium in size, curving outward, upward and inward. Ears are of medium length, while dewlap is voluminous. Navel flap is large. Hump is of large size in male and sheath pendulous. Tail is long, fine, tapering to a good black switch well below hock. Udder is well developed with prominent milk-vein. Females are docile and average milkers. Milk yield is 1,560 kg (range 1,062 to 2,810 kg). Average lactation length is 336 days (range 306 to 431 days).

राठी

राठी राजस्थान के पश्चिमी भागों में मिलने वाली यह एक प्रमुख दूध देने वाली गौ प्रजाति है। इसका पालन मुख्यतः वहीं की एक जनजाति राठ करती रही है इसलिये इसका नाम राठी पड़ा। इस जनजाति में हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों सम्प्रदाय हैं और ये



विचरणशील होते हैं। इसका उत्पत्ति स्थल थार रेगिस्तान के मध्य स्थित बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर क्षेत्र में है। यह एक सममित आकृतिवाली मध्यम आकार की प्रजाति है। त्वचा भूरे रंग की होती है जिस पर सफेद रंग के धब्बे होते हैं। ये छोटे-छोटे धब्बे मिलकर बड़ा टुकड़ा बना लेते हैं। इनके शरीर के नीचे की त्वचा का रंग हल्का होता है। ललाट चौड़ा एवं तश्तरी नुमा होता है। थूथन एवं खुरों का रंग काला होता है। आँखों की पलकें भूरे या काले रंग की होती हैं। सींग छोटे व मध्यम आकार के होते हैं, जोकि बाहर की ओर को वक्राकार, ऊपर को उठे हुये एवं सिरों पर अन्दर की ओर निकले रहते हैं। कान मध्यम आकार के, गले की झालर बड़ी एवं भारी तथा नाभि स्थल बड़ा होता है। कूबड़ का

आकार नर पशुओं में बड़ा एवं शरीर का आकार पेन्डुलम की भांति होता है। पूंछ लम्बी, ऐंठी हुई एवं सिर पर काले रंग की तथा खुरों के संधि स्थल तक लटकी होती है। बाँक एवं दुग्ध नली स्पष्ट रूप से विकसित होती है। गायें सुन्दर, आकर्षक तथा अच्छा दूध देने वाली होती हैं। प्रति ब्यांत इनका दुग्ध उत्पादन लगभग 9500 कि.ग्रा. तक रहता है। इसकी उच्चतम उत्पादन क्षमता लगभग 2000 कि.ग्रा. तक रहती है। इसका दुध अन्तराल 300 से 430 दिनों तक का होता है।

REDSINDHI

Red Sindhi breed is mostly found in Karachi and Hyderabad districts of Pakistan. Some organized herds of this breed are also found in India in the states of Orissa, Tamil Nadu, Bihar, Kerala and Assam. Red Sindhi is considered to have originated from Las Bela cattle found in the state of Las Bela, Baluchistan. The original herd was established at Malir outside Karachi.

Red Sindhi cattle are somewhat similar to Sahiwal and may also be related to Afghan and Gir cattle. Red Sindhi is one of the important dairy cattle breeds in Indian sub-continent. Realizing its potential, the Government of India established Central Cattle Breeding Farm at Chiplima, Orissa on 15.01.1968. Red Sindhi cattle have been exported to Afghanistan, Nepal, Myanmar, Thailand, Cambodia, Vietnam, Malaysia, Brunei, Sarawak, Sri Lanka, Indonesia, the Philippines, Taiwan, Korea, Iran, Iraq and Saudi Arabia in Asia; Tunis, Kenya, Tanzania, Seychelles and Mauritius in Africa; the United States of America, Brazil and Cuba in the Americas and Australia.

This breed has distinctly red colour. Red shades vary from dark red to dim yellow. Though patches of white are seen on dewlap and sometimes on forehead, no large white patches are present on the body. In bulls, colour is dark on the shoulders and thighs. Hair is soft and short, and skin is loose. Milk production is around 1,840 kg (range 1,100 to 2,600 kg) and lactation length 296 days (range 260 to 330 days). Fat is around 4.5% (range 4.0 to 5.2%).

लालसिंधी

यह भारतीय उपमहाद्वीप की एक विशिष्ट दुधारू गौ प्रजाति है। यह मुख्यरूप से पाकिस्तान के करांची एवं हैदराबाद जिलों में पायी जाती है। इसकी कुछ संख्या उड़ीसा, तमिलनाडु, बिहार, केरल एवं असम में भी मिलती है। लाल सिंधी कुछ सीमा तक साहीवाल से मिलती जुलती प्रजाति है तथा अफगान एवं गीर नस्ल के पशुधन से भी समानता रखती है। यह गहरे लाल रंग से हलके पीले रंग तक परिवर्तित रंगों में भी मिलती है। इसमें माथे एवं गले की झालर पर सफेद रंग के निशान भी मिलते हैं। लेकिन ये धब्बे छोटे-छोटे ही होते हैं। साँड़ों में कंधे एवं जांघ गहरे लाल रंग के होते हैं। बाल छोटे एवं मुलायम होते हैं। त्वचा ढीली होती है। दुग्ध उत्पादन 9900 से 26000 किग्रा तक प्रति ब्यांत होता है। दुग्ध उत्पादन समयान्तराल लगभग 260 से 330 दिनों का होता है। दुग्ध में वसा औसतन 4.5% होता है।



SAHIWAL

The Sahiwal is one of the best dairy breeds of zebu cattle. Though its original breeding tract lies in Montgomery (now Sahiwal) district of Pakistan, yet some herds are also found in India along the Indo-Pak border in Ferozepur and Amritsar districts of Punjab, and Sri Ganganagar district of Rajasthan. Sahiwal breed, because of its desirable traits, is being utilized widely for improvement of local stock or for initial crossbreeding of the indigenous stock before undertaking upgrading with European breeds in many warm humid countries of the world. It is known to have been introduced into 17 other countries, besides Pakistan and India. These are: Mauritius, Kenya, Tanzania, Sierra Leone, Malaysia, the Philippines, Vietnam, Thailand, Myanmar, Bangladesh, Sri Lanka, Nepal, Brazil, Jamaica, Trinidad, Australia and New Zealand.

Coat colour is usually reddish dun but pale red or brown occasionally mixed with white spots is also not uncommon. The Sahiwal is a heavy breed with symmetrical body and loose skin. Animals are long, deep, fleshy and comparatively lethargic. Horns are short and stumpy. Udder is generally large, bowl shaped, pliable, and firmly suspended from the body. Average milk yield is 2,326 kg

(range 1,600 to 2,750 kg).

Average lactation length is 318 days (range 285 to 375 days).

Fat is 4.8 to 5.1% (average 4.93%).



साहीवाल

यह भारतीय नस्ल की गायों में सर्वोत्तम दूध देने वाली प्रजाति है। इसका उत्पत्ति स्थल मॉंटगोमरी, वर्तमान पाकिस्तान में है। इसके कुछ समूह भारत-पाक सीमा के करीब फिरोजपुर एवं अमृतसर जिलों में एवं राजस्थान के श्रीगंगानगर जिलों में पाये जाते हैं। इसकी उपयोगिता को देखते हुये विश्व भर में इसके द्वारा संकरीकरण करके उपयोग किया जा रहा है। सामान्यतः इसकी त्वचा का रंग लाल, पीला-लाल या भूरा-सफेद धब्बों के साथ मिश्रित

क्रम में मिलता है। पशु लम्बे, गहरावदार एवं चमकदार होते हैं। सींग छोटे एवं मोटे तथा कुंद ठिंगना होता है। बाँक सामान्यतः बड़ा गोलाकार, भारी एवं शरीर से अलग दिखायी देती है। इससे प्रति ब्यांत दुध उत्पादन औसतन २३०० (१६०० से २७५०) कि.ग्रा. होता है। दुध उत्पादन समयान्तराल लगभग ३१८ दिन एवं वसा ४.८ से ५.१% तक रहता है।

SIRI

The Siri is small sized zebu cattle of hilly region and is found in upper reaches of Darjeeling district in West Bengal and Sikkim Districts in India. There are some related types of Siri cattle. Kachha Siri: This is a Nepal x Siri cross, and is very similar to the Siri, but is distinguished from it by the colour pattern and position of hump and horn. Tarai: This type is found in Nepal and is sometimes referred to as Siri. Animals are either black with white patches or brown with white patches. In some cases they're totally black or brown. Skin is grey, and muzzle and eyelids are black. Black and white pattern is similar to that of Holstein-Friesian. Tail switch is black or white and hooves are black. Forehead is convex, wedge shaped with white patches. Horns are of medium size and curved outward, forward, slightly upward and inward with prominent hairy poll. Ears are of medium size and horizontal. Abdomen and inner part of legs are generally light in colour. Udder is small size with firm attachment. Milk yield is around 2-6 kg/day with lactation length of about 210 to 274 days. The fat content is 2.8 to 5.5 %, SNF 7.56 to 9.37%. A large variation is observed in the performance of Siri animals. The performance can be improved further by proper selection and distribution of Siri in breeding tract

सीरी

सीरी एक छोटे आकार की पहाड़ी प्रजाति है जो प० बंगाल, दार्जिलिंग एवं सिक्किम के पहाड़ी क्षेत्रों में मिलती है। इसके बहुत सारे सापेक्षिक रूप मिलते हैं, जैसे काछा-सीरी जोकि नेपाल एवं सीरी की संकर नस्ल है। यह सीरी के समान ही प्रतीत होती है। इस प्रजाति के पशुओं का रंग काला या भूरा सफेद धब्बेदार होता है। त्वचा का रंग सलेटी जबकि थूथन का रंग काला होता है। काले एवं सफेद रंग का मिश्रण होलस्टीन फ्रीजियन प्रजाति के समान ही होता है। माथा उन्नत पंचभुजाकार एवं सफेद धब्बों से युक्त होता है। सींग मध्यम आकार के बाहर की ओर निकले हुये होते हैं। कान मध्यम आकार के एवं धरती के समानान्तर होते हैं। पैरों के नीचे एवं मध्य का भाग हल्के रंग का होता है। बाँक का आकार छोटा एवं पेट से चिपका हुआ प्रतीत होता है। दूध उत्पादन की क्षमता ३-६ किग्रा प्रति दिन की होती है। जबकि दूध उत्पादन का समयान्तराल लगभग २१० से २७४ दिनों का होता है। इस प्रजाति के दूध में वसा २.८ से ५.५% होता है।



THARPARKAR

The name Tharparkar has been derived from the place of its origin - the Thar desert. Home tract of this breed is in the Tharparkar district of southeast Sind in Pakistan. These animals are found along the Indo-Pak border covering western Rajasthan and up to Rann of Kutch in Gujarat. Tharparkar is not a homogeneous breed but it has the influence of the Kankrej, Red Sindhi, Gir and Nagori breeds. On the western side of the habitat the influence of the Red Sindhi is prominent, and on the north and northeast of the Nagori. In other parts influence of the Kankrej is predominant. A sprinkling of the Gir is also evident. In spite of all the heterogeneity, a medium type breed adapted to the desert conditions has been developed.

Animals are white or light grey. Face and extremities are of a darker shade than the body. Hairs are fine, short and straight, but in males they are slightly curly on the forehead. Forehead is broad and flat or slightly convex above eyes. The front of horns and face are practically in one plane. In bulls the convexity may be slightly more pronounced. Face is lean, fine and slightly dished to muzzle. Lips are muscular and jaws strong. Eyes are full and placid. Ears are somewhat long, broad and slightly pendulous.

Tharparkar cows calve for the first time at an average age of about 1,247 days (range 1,116 to 1,596 days), milk yield is 1,749 kg (range 913 to 2,147 kg) and calving interval 431 days (range 408 to 572 days) fat is about 4.88% (range 4.72 to 4.90%) and SNF 9.2% (range 8.9 to 9.7%).

थारपरकर

दक्षिणी सिंध (पाकिस्तान) का थारपरकर जिला इस प्रजाति का उत्पत्ति स्थल है। यह प्रजाति भारत पाक सीमा पर राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र से प्रारम्भ होकर गुजरात में कच्छ के रन तक पायी जाती है। इस प्रजाति का विकास

थार रेगिस्तान की जलवायु एवं अन्य परिस्थितियों के अनुरूप हुआ है। इस प्रजाति की गायों की त्वचा का रंग सफेद या हल्का सलेटी होता है। चेहरा और अंगों के शीर्ष गहरे रंग के होते हैं। बाल छोटे, खड़े एवं साफ होते हैं। बैलों में या नर गौवंश में माथे के ऊपर घुँघराले बाल होते हैं। माथा चपटा, चौड़ा व हल्का सा आँखों के ऊपर उन्नत होता है। सींगों का तल एवं चेहरे का तल समान होता है। साँड़ों में माथे का उन्नत भाग और अधिक उठा हुआ



होता है। चेहरा झुका हुआ साफ एवं थोड़ा सा गोलाई लिये होता है। जबड़ा बहुत मजबूत होता है। आंखें गम्भीर एवं शान्त प्रतीत होती हैं। कान थोड़े से लम्बे, चौड़े एवं हल्के से लटकते हुये होते हैं। इस प्रजाति का प्रथम ब्यांत लगभग 9287 दिन में हो जाता है तथा दुग्ध उत्पादन 600 से 2600 किग्रा या औसतन 9750 किग्रा जबकि प्रथम ब्यांत से दूसरे ब्यांत के बीच का अन्तर 807 से 572 दिनों का रहता है। इसके दूध में वसा औसतन 8.6% प्रतिशत रहता है।

UMBLACHERY

Umbalachery breed of cattle, one of the best draught breeds of Tamil Nadu, is found in Thanjavur, Thiruvavur and Nagappattinam districts. It derives its name from its home tract, Umbalachery, a small village 10 km away from Thiruthuraiipoondi town in Nagapattinam district. This breed is considered to be developed by crossing Kangayam with local animals of Thanjavur, and is very similar to Kangayam except in the appearance of head and smaller size. These are light built draught animals developed for work in the marshy paddy fields. About 60-70% of cattle in this area belong to Umbalachery breed. Umbalachery calves are generally red or brown at birth with all the characteristic white markings on the face, on limbs and tail. This colour changes to grey at about 6 months of age. In adult females, the predominant coat colour is grey with white markings on face and legs. Bullocks are grey in colour. All the legs below hocks have white marks either 'socks' or 'stockings' even a portion of hooves is white. Forehead is fairly broad, sometimes with a slight groove in the middle. It is well pronounced with white star. Face is short and straight. Muzzle is broad and black. Eyes are prominent and bright with black eyelashes. Ears are short, erect and laterally placed. Horns are very small, curving outward and inward and sometimes spreading laterally. These are thick in bulls and thin in cows. Hump is medium in size, not fleshy, generally erect. Dewlap is thin and short extending to the sternum. In cows, udder is moderately developed with small and squarely placed teats. Milk-vein is not prominent. Bullocks are small, swift and suited for agricultural operations. Umbalachery bullocks are used for ploughing, carting, thrashing and paddling. The bullocks are capable of doing work for 6 to 7 hours under hot sun. A pair of bullocks can pull a total load (including cart weight) of 2 to 2.2 tones over a distance of 20

अंब्लाचेरी

यह तमिलनाडु राज्य की सर्वोत्तम कृषि एवं परिवहन सम्बंधी गौवंशीय प्रजाति है। यह तमिलनाडु राज्य में तंजावूर, थिरुवयूर एवं नागापट्टिनम जिलों में पायी जाती है। इसका नामकरण इसके उत्पत्ति स्थल उम्बलाचेरी, जोकि नागापट्टिनम जिले में थिरुथुरईपुण्डी नामक कस्बे से 90 किमी दूर अवस्थित है, के नाम पर हुआ है। इस प्रजाति का विकास कंगायम के साथ तंजाऊर की स्थानीय प्रजातियों के संकरीकरण से हुआ है। यह कंगायम से केवल सिर एवं आकार में अंतर रखती है। यह प्रजाति धान के खेतों के लिये तैयार की जाने वाली दलदली भूमि पर कार्य करने के लिये अत्यधिक उपयुक्त है। इस क्षेत्र में 60-70 प्रतिशत गौवंश इसी प्रजाति का है। इस प्रजाति के गौवंश जन्म के समय लाल या भूरा एवं चेहरे, अंगों एवं पूंछ पर सफेद धब्बों से युक्त होता है। यह रंग धीरे-धीरे लगभग 6 महीने में सलेटी रंग में परिवर्तित हो जाता है, परन्तु पैरों के संधि स्थल से नीचे का भाग, घुटनों से नीचे एवं खुर से ऊपर का भाग एवं खुरों का कुछ भाग सफेद होता है। माथा चपटा एवं साफ होता है। कभी कभी इनके माथे पर मध्य में एक गड्ढा भी मिलता है। इस गड्ढे को सफेद तारा कहा जाता है। चेहरा छोटा व सपाट होता है। थूथन चौड़ा एवं काले रंग का जबकि आँखें काली व चमकदार तथा पलकें काले रंग की होती हैं। कान छोटे, उन्नत एवं पीछे की ओर उठे हुये रहते हैं। सींग बहुत छोटे एवं कभी कभी पीछे की ओर को फैले रहते हैं। गायों में ये पतले जबकि साँड़ों में ये मोटे होते हैं। कूबड़ मध्यम आकार का एवं उन्नत होता है। गले के नीचे की झालर छोटी पतली एवं शरीर के खोल तक बढी हुई रहती है। बाँक विकसित परन्तु थन छोटे एवं चतुर्भुजाकार रूप से अवस्थित रहते हैं। बैल छोटे एवं खेती के अनुकूल होते हैं। ये गर्मी में भी लगातार 6 से 7 घन्टे तक कार्य कर सकते हैं। इस प्रजाति की गायों से लगभग 2 किग्रा दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है। एक ब्यांत में गाय 300 से 400 किग्रा दूध का उत्पादन करती है। दूध में औसतन 5.0% वसा होती है।



VECHUR

The Vechur cow has now attracted international recognition and attention. The credit of saving the Vechur cattle from the brink of extinction goes to a conservation programme undertaken by the Kerala Agriculture University (KAU). The Vechur cattle are now recognized as the smallest cattle in the world. The maximum height of a Vechur cow is 91 cms. This diminutive cow, weighing on an average 107 kgs. can give an average yield of 3 litres of milk per day. Proportionate to its body weight, the Vechur cow yields maximum milk in the world. The local people preserved the purity of the breed by selective breeding. The extremely small size, low feed requirements, high disease resistant and lovable nature of the cute animals made the Vechur cattle the attractive. The dwarf cattle were well adapted for the hot, humid tropical climate of Kerala. Vechur bulls, though small in size (maximum height at hump level 105 cms), were very strong and these lightweight animals were used for ploughing marshy paddy fields typical of Kerala.

Infant mortality has been found to be almost nil in Vechur cattle under farm conditions, quite resistant to foot and mouth disease and mastitis. Compared to crossbred cows, significantly lower incidences of respiratory infections have been reported from Vechur cattle. The percentage of fat and total solids in the milk of Vechur cows is higher compared to crossbred cows. But a more significant aspect is the size of the fat globules. The small size of fat globules means high phospholipid content because of greater surface area. Phospholipids are important in the development of brain and nerve tissues and also play a vital role in the absorption and digestion of fat. Thus the Vechur cow milk and its products are suitable for infants and the sick.

वेचूर

यह विश्व की सबसे छोटी गौ प्रजाति है। इस प्रजाति ने वैश्विक समुदाय का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

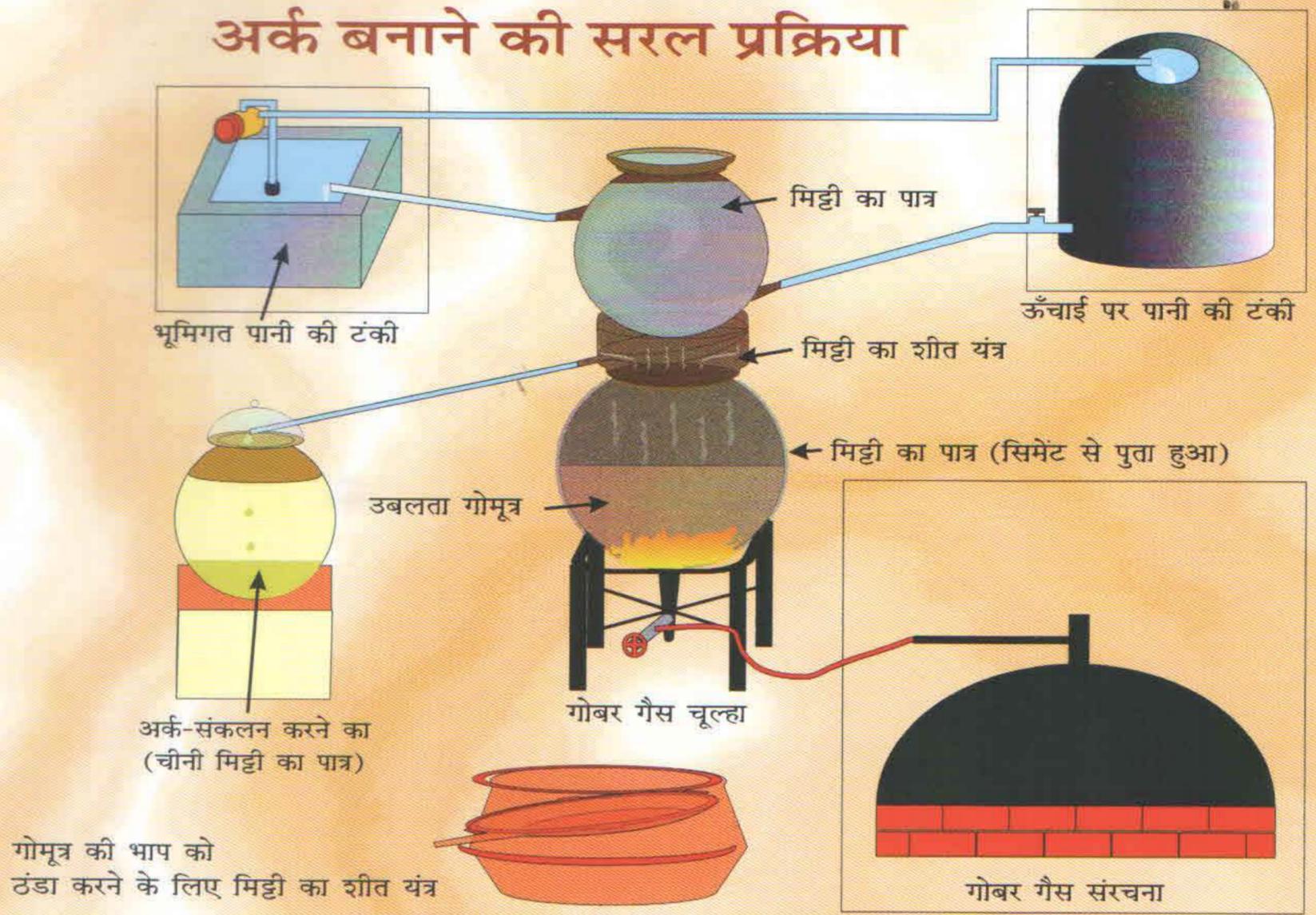
इसे समाप्ति के कगार से पुनः स्थापित करने में केरल कृषि विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस गाय की अधिकतम ऊँचाई ९१ से०मी० एवं वजन १०७ किग्रा तक होता है। यह प्रतिदिन लगभग ३ लीटर तक दूध का उत्पादन करती है। अपने शरीर के अनुपात में यह प्रजाति विश्व में किसी भी गौ प्रजाति से सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन करती है। छोटा आकार, कम आहार एवं उच्च रोग प्रतिरोधी क्षमता इसे एक अति महत्वपूर्ण गौ प्रजाति बनाता है। यह बौनी प्रजाति केरल की गर्म एवं आर्द्र परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल है।



वेचूर प्रजाति के बैल यद्यपि आकार में छोटे होते हैं, परन्तु इनकी दलदली भूमि में कार्य करने की क्षमता बहुत अधिक होती है। मुंह एवं खुरपका, थनैला आदि रोगों का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इनके दूध में वसा कम होती है, लेकिन वसा के कणों में फास्फोलिपिड की उपस्थिति अधिक होती है जो मष्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र को मजबूती प्रदान करता है। इसलिये वेचूर प्रजाति की गायों का दूध रोगियों एवं बच्चों के लिये अति उपयुक्त माना गया है।

अर्क बनाने की सरल प्रक्रिया



कामधेनु

मच्छर अवारुबन्ती MOSQUITO COIL

विष रहित - पर्यावरण रक्षक

गोबर, गोमूत्र नीम एवं तुलसी युक्त

घटक द्रव्य

1. गोबर चूर्ण
3. नीम चूर्ण
5. गॉरगम चूर्ण
7. पाईन तेल
9. तिखाडी तेल

प्रमाण

- 500 ग्राम
- 100 ग्राम
- 50 ग्राम
- 25 मि.ली.
- 25 मि.ली.

घटक द्रव्य

2. मैदा लकडी चूर्ण
4. गोबर मसी
6. गोमूत्र
8. नीम तेल
10. पानी

प्रमाण

- 200 ग्राम
- 200 ग्राम
- 500 मि.ली.
- 25 मि.ली.
- 1200 मि.ली.

निर्माण विधि :- सर्व प्रथम उपरोक्त प्रमाण में गोबर चूर्ण, मैदा लकडी चूर्ण, नीम चूर्ण एवं मंजन चूर्ण को एकत्रित कर लें। उसमें गॉरगम का चूर्ण डालें। गोमूत्र में पाईन तेल, नीम तेल और तिखाडी तेल मिला दें और चूर्ण के मिश्रण में डालें। अब आवश्यकतानुसार थोडा-थोडा पानी डालकर आटे की तरह गूँथ लें। इसके 120-120 ग्राम के गोले बनाकर एक प्लास्टिक की पन्नी पर 2 m.m. की मोटाईवाली रोटी जैसा बेल लें। इस रोटी को प्लास्टिक के साथ उठाकर मशीन में रखें व मशीन का हैंडल दबाएँ। तयार कॉईल को छाँव में दो से तीन दिन तक सुखा लें।

उपयोग :- इस कॉईल को जलाने से मच्छर-मक्खी तो दूर होते ही है किन्तु पर्यावरण भी शुद्ध और किटाणुरहित होता है।

